सप्त सुरनसो तीन ग्राम जुत. श्री जिनेन्द्र गुण गाऊं ॥ १ ॥
सा रे ग म प द् नी सा, नी नी ध प म ग रे सा ।
ता थेई थेई तत तत, गगर गगर सारे गम पद् नीसा । नादिर
दानी तुमदिर तानी, तुम तन दिरना मंगल गान आनन्दसो करना ।
मस्त बत्र तन करि वलदेव प्रभुको हिरदे में पधराऊं ॥ ३ ॥

(५) दादरा-खेमटा ।

मैं तो तेरो तावेदार जिनजी ॥ टेक ॥
तोरनसे रथ फेरा प्रभु पशुवन कीनी किलकार ॥ १ ॥
भवसागर में डूवा वय्याँ, गहि राखो महाराज ॥ २ ॥
तुम तो चले गिरनारी स्वामी, मोह काहे छोड़ी महाराज ॥ ३ ॥

(६) दादरा ।

निरखत छवि नाथ नैना, चकित रस ह्वै गये ॥ टेक ॥
रवि कोट द्युति लज आत है नख दीप्त अपार ॥ १ ॥
एक तो परम वैराग है दूजे शाँति स्वरूप ॥ २ ॥
उपमां 'हजारी' से ना वने अनुपम जगचन्द्र ॥ ३ ॥

(७) दादरा-बुन्देलखन्डी ।

सामलिया पारसनाथ ! हमारे सघन विघन घन नासियो ॥ टेक ॥
स्वामी चार घातिया घात के फिर केवल ज्ञान प्रकाशियो ॥ १ ॥
भव्य भवोदधि तारिके फिर कीनो शिवपुर राज ॥ २ ॥
स्वामी से 'मानिक' यह विनती मेरा आवागमन निवारियो ॥ ३ ॥

(८) दादरा-भैरवी ।

जिनजीको दरशवा मैं नाहीं छाडों रे ॥ टेक ॥
लाख चौरासी गति चारों में भ्रम आयो, भ्रम आयो, भ्रम आयो रे,
चारों गति के भ्रमणवा में भ्रम आयो रे ॥ १ ॥ अष्ट कर्म
तिन वीच अकेला दुःख पायो, दुःख पायो दुःख पायो रे, इन कर्मन के

संग मैंने कुछ पायो रे ॥ २ ॥ 'दास' कहे भजि लेहु प्रभू को शिर नायो, शिर नायो, शिर नायो रे, जिन चरण कमल मैंने शिर नायो रे ॥ ३ ॥

(९) राग—सोमठा।

धनि आई सफल सुरनार पारस पूजन को ॥ टेक ॥

काशी देश बनारसि नगरी अश्वसेन दरबार ॥ १ ॥
इन्द्र सची मिल करत आरती सचिय पुण्य भंडार ॥ २ ॥
कोई ताल मृदंग बजावत कोई करत जैकार ॥ ३ ॥
कोई भाव बनावत गावत जिनगुण वृन्द अपार ॥ ४ ॥ धनि० ॥

(१०) ध्रुपद।

अरिहंत के जपैतें अष्ट कर्म को विनास होत, सिद्ध के जपैतें अब सिद्ध पद पाइये ॥ १ ॥ आचारज के जपैतें, आत्मीक शुद्ध होत, उवज्झाय के जपैतें, अब ऊच्च पद पाइये ॥ २ ॥ साधु के जपैतें शिव मार्ग ही दिखाइ देत, तीन रतन पाय सू, निजात्म को पिचानिये ॥ ३ ॥ कहता 'विनोदीलाल' जपो नवकार माल, जाको आप जपैं तें, अब मोक्ष पद पाइयें ॥४॥

(११) ठुमरी-झझोटी।

नेम प्रभु की श्याम बरन छवि नैनन छाय रही ॥टेक॥
मणिमय तीन पीठ पर अम्बुज तापर अधर ठही ॥ १ ॥ मार २ तप धार जरा विधि केवल ऋद्धि लही । चार तीस अतिशय दुति मंडित नव दुग दोष नहीं ॥ २ ॥ जाहि सुरासुर नमत सदा हैं मस्तक परस मही । श्री गुरुवर अम्बुज प्रफुलावन अद्भुत भान सही ॥ ३ ॥ धर अनुराग विलोकत जाको दुरति नशे सब ही । 'दौलत' महिमा अतुल जासुकी कापै जात कही ॥

(१२) दादरा-भैरवी।

मेरी वार क्यों ढील करी प्रभुजी ॥ टेक ॥

सूलीतें सिंहासन कीनों सेठ सुदर्शन विपत हरी। सीता सती अगन में पैठी पावक नीर करी सगरी ॥ १ ॥ वारपेन को खड्ग चलाओ फूल मालकीनी सुथरी। धन्ना वापी धरो निकारयो ताघर ऋद्धि अनेक भरी ॥ २ ॥ श्रीपाल सागरतें तारयो राज भोग के मुक्त वरी। सांप कियो फूलन की माला सोमापर प्रभु दया धरी ॥ ३ ॥ 'द्यानत' एक कछू नहिं चाहे मन वैराग दिशा हमरी ॥

(१३) गजल—कव्वाली।

तुम्हारे दर्श विन स्वामी, मुझे नहिं चैन पड़ती है। छवी वैराग तेरी सामने, आंखों के फिरती है ॥ टेक ॥ निराभूषण विगत दूषण, परम आसन मधुर भाषण, नजर नैनोंकी नाशा की, अनी पर से गुजरती है ॥ १ ॥ नहीं करमों का डर हमको, कि जवलग ध्यान चरणन में। तेरे दर्शन से सुनते हैं, कर्म रेखा वदलती है ॥ २ ॥ मिले गर स्वर्ग की सम्पत, अचम्भा कौनसा इस में। तुम्हें जो नयन भर देखे, गती दुरगति की टरती है ॥ टेक ॥ हजारों मूर्तिएं हमने वहुतसी गौर कर देखीं। शान्ति मूरत तुम्हारीसी, नहीं नजरों में चढ़ती है ॥ ४ ॥ जगत सरताज हो जिनराज 'न्यामत' को दरश दीजे। तुम्हारा क्या बिगड़ता है मेरी बिगड़ी सुधरती है ॥ ५ ॥

(१४) तर्ज—रावण सुनों सुमति०।

मेरी अर्ज सुनो महाराज! वसु विधि कर्म जलानेवाले ॥ टेक ॥ मैं तो कियो मोह-मद पान, रही न निज पर की पहिचान, भूलो विषयन में सुखमान, विषय बंध छुड़ानेवाले ॥ १ ॥ आयो भाग्य उदय अविशेष, पाया जिनवर धर्म विशेष,

आवे सद्गुरु के उपदेश, वसु विधि कर्म जलानेवाले ॥ २ ॥ मैं तो भटक्यो बहु संसार चारों गति का दुःख अपार मैंने सहा अनंत अपार, वसु विधि कर्म जलानेवाले ॥ ३ ॥ मोको कीनो अपनो दास, याते रहे न विधि की फांस, विनती यही जिनेश्वर खास, सुनिये मुक्ति के देनेवाले ॥ ४ ॥

(१५) तर्ज—गगण सुनो सुमति० ।

मेरी जिनवर सुनो पुकार, वसु विधि कर्म जलानेवाले ॥ टेक ॥ मेरे कर्म अनादि साथ, मेरी संपत इनके हाथ, मोकू देते दुःख दिनरात, वैरी कर्म भुलानेवाले ॥ १ ॥ मैंने कीना नहीं विगार, तो भी देते दुःख अपार, इनका ऐसा है अख्तयार, नाहक दुःख दिलानेवाले ॥ २ ॥ मैं तो सदा अकेला एक, मेरे दुश्मन कर्म अनेक, सबको दुख देने की टेक, केवल आप जगानेवाले ॥ ३ ॥ देते गाफिल करके मार, लेते घेर कुगति में डार, मोकू भवदधि से कर पार, जिनेश्वर धर्म चलानेवाले ॥ ४ ॥

(१६) गजल ।

याद होते हीं तुम्हारी, हाल और ही हो गया ।
हे प्रभू ! खटका हमेशाका अलहदा हो गया ॥ टेक ॥ दर्द औ गम की कहानी, है मेरी बहुत ही कड़ी । चार गति के रंज सहते, कायरे दिल हो गया ॥ १ ॥ कहने की ताकत नहीं, दुख दर्द जो मैंने सहे । हे दयानिधि ! जानते हो, सो भरोसा हो गया ॥ २ ॥ मूर्ख ध्यानी हो गये, और पतित धर्मी भये । हुई कृपा जिनपै प्रभु सो, रंक राजा हो गये ॥ ३ ॥ क्या करूं मुख एकसे, तारीफ तुमरी अय प्रभू ! ये हमारे से अधम, तिनको सहारा हो गया ॥ ४ ॥ सब विधि है हीन 'मथुरा', चाहता है हस्तको । कष्ट अपार दयाल प्रभुना—तें बड़ा दिल हो गया ॥ ५ ॥

(१७) रेखता।

भगवान् आदिनाथ जिन सो मन मेरा लगा।
आराम मुझे होत है दुख दर्शसे भगो ॥ टेक ॥ मरुदेवी नन्द धर्मकन्द
कुलमे सुर उगा। नृप नाभिराय के कुमार नमत सुर खगा ॥ १ ॥
युगला निवार धर्मको संसारको तगा। वसु कर्मको जराय शिव
पंथमें लगा ॥ २ ॥ अब तो करो शिताब महिरबान दिल लगा।
कहे दास 'हीरालाल', दीजे मुक्तिका मगा ॥ ३ ॥

(१८) भजन—देखो रे एक बाला जोगी।

देखो जी, आदीश्वर स्वामी कैसा ध्यान लगाया है।
कर ऊपर कर सुभग विराजे आसन थिर ठहराया है ॥ टेक ॥
जगत विभूति भूतिसम तजकर निजानन्द पद पाया है।
सुरभित स्वासा आसा वासा नासा दृष्टि सुहाया है ॥ १ ॥
कंचन बरन चले मनरंजन सुरगिर ज्यों थिर थाया है।
जास पास अहि मोर मृगी हरि जाति विरोध नशाया है ॥ २ ॥
शुद्धउपयोग हुताशन में जिन वसु विधि समिध जलाया है।
श्यामलि अलिकावलि शिर सोहे मानो धुंआं उड़ाया है ॥ ३ ॥
जीवन मरण अलाभ लाभ जिन तृण मणिको सम भाया है।
सुर नर नाग नमहिं पद जाके 'दौल' तास जस गाया है ॥ ४ ॥

(१९) केहरवा।

सुफल भई मेरी आज नगरिया ॥ टेक ॥
बहुत दिनन से भटकत २ आज मिली सुर पुरकी डगरिया ॥
पारसनाथ प्रभुके न्हवन को भर २ लायो जल क्षीर गगरिया ॥
दृग सुख नैन दोउ कर जोड़ें मैटो प्रभु भव भवकी भँवरिया ॥

(२०) तर्ज—प्रभु तार तार भव सिन्धु पार।

आई इन्द्रनार कर २ सिंगार। ठाड़ीं समुद्र द्वार सेव्याँ देवी
माय चरनन मझार मस्तक धर दीनो ॥ टेक ॥ लखि भजोरी

नेम सुत भयोरी नेक तन कृत यम चल मोर जेम। उर अतिप्रमोद भरि करि लीनो ॥ १ ॥ दृग जोर जिन प्रभु मुख निहार। कर नमस्कार हरि गोद धार। पुलकन्त गात गज चढ़ दीनो ॥ २ ॥ गिर शीश धारिकर नटत वार। नाटिक वियार वलि जुवार। इरावतमें भयो हरियन वीनो ॥ ३ ॥ टेक

(२१) गजल।

खयालकर दिल मझार चेतन, अजब करमने झुकाई गतियां ॥टेक॥ निगोद वस कर सुबोध खोया, त्रिजग व नारक वानस्पतियाँ। कभी मनुष वा कभी सुरग वा, अनादिसे कहुं मिताई रतियाँ॥१॥ यह दुक्ख भर २ यतीम हुआ, न गौरकी सुनाई वतियां। पड़ा हूं अय तो उसीके दरपे, लगें 'हजारी' न यमको पतियाँ ॥ २ ॥

(२२) रेखता।

महवूब तेरा तुझमें है, तू देखता नहीं। नाहक भटक भटक फिरे, क्या फायदा कहा ॥ टेक ॥ आह न जानी खुशबू तन, आपने वसी। दर्म्यानिमें जंगल के फ़िरे, ढूंढता योंही ॥ १ ॥ ज्यों शीशके महल में तन, देखके छवी। नाहक भोंक भोंक मरे स्वान ज्यों सही ॥ २ ॥ दिलदार समझ दिलमें, कहता है 'रामकृष्ण' भर आओ अपने यार, भली वात है यही ॥ ३ ॥

(२३) रसिया

तोसे लागीरे लगन चेतन रसिया ॥ टेक ॥ कुमति सौतके संग तुम राचे, नाना भेष गति २ धरिया ॥ १ ॥ नरक मांहि विललात फिरत थे, वे दुःख विसर गये रसिया ॥ २ ॥ नीठ नरकनसे कढ़कर मानुष भव दुर्लभ वसिया ॥ ३ ॥ नर भव पाय वृथा मत खोवो, ऐसा अवसर नहिं मिलिया ॥ ४ ॥ कहते 'हजारी' सुमति संग राचो, कुमति छोड़ तुम हो सुखिया ॥५॥

(२४) रसिया।

कब मिलि हैं साधु बनोवासी रसिया ॥ टेक ॥ निर्विकार निर्ग्रन्थ दिगम्बर, तोर दई ममता फाँसी ॥ १ ॥ ये प्रभु सब जीवन के रक्षक, मिथ्या तम हर सुखरासी ॥ २ ॥ राज पाट राज परिजन छोड़े, जिन छाँड़ि दई राजुल स्वामी ॥ ३ ॥ 'मानिक' के उर बसो जगत गुरु, धन्य भाग जब मिल जासी ॥ ४ ॥

(२५) लावनी।

णमोकार मंत्र के जपैं मोक्ष पद पावे। बिन भजै जिनेश्वर नाम नरक गति जावे ॥ टेक ॥ इक सेठ सुदर्शन पूर्व कर्म जहाँ कीना। तहाँ जपो मंत्र णमोकार सिंहासन लीना ॥ १ ॥ दूजे श्रीपाल महाराज कुष्ट तन धारा ॥ २ ॥ तीजे सती द्रोपदी चीर दुशासन ताना। तहां जपो मंत्र णमोकार लाज तहाँ आना ॥ ३ ॥ चौथे अंजन चोर अधम बहु कीना। शंका को छोड लर काट मोक्ष पद लीना ॥४॥ णमोकार मँत्र जग में प्रसिद्ध है भारी। कहते हैं 'पार्शदास' लावनी गाई ॥ ५ ॥

(२६) गजल-कव्वाली।

घड़ी धन आजकी सबको, मुबारिक हो मुबारिक हो।
हुए जिनराज के दर्शन मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ टेक ॥
कहीं अरचा कहीं चरचा, कहीं जिनराज गुणगायन।
महातम जैन शासनका, मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ १ ॥
चमर छत्रादि सिंहासन, प्रभाकर श्रेष्ठ भामंडल।
अनूपम शान्तिमुद्रा ये मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ २ ॥
सफल हो कामना 'कुन्दन' यही अरदास है स्वामिन!
सभा सज्जन व जिन शासन, मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ ३ ॥

(१७) गजल-कव्वाली ।

मिला दीदार पारसका, आरजू ई हमारी है ॥ टेक ॥
तआला हो तुम दुनियां में, वयां करे खल्क सारी है ।
कत्ल दुश्मन किये आठो, राह जिन्नत निकारी है ॥ १ ॥
मोह जालिम ने खलकन के, गले जंजीर डारी है ।
परेशां हुं सभी यासे, ये वदमूजी शिकारी है ॥ २ ॥
मिहर बन्दापे अब कीजे, पेश अर्जी गुजारी है ।
मेरे दुश्मन फना कीजे, मुझे तकलीफ भारी है ॥ ३ ॥
नफर 'नथमल' की ऐ कादिर, गुजारिश बारबारी है ।
करो हम वार फिदवीको, मिहरवानी तुम्हारी है ॥ ४ ॥

(१८) गजल-कव्वाली ।

मुझे है चाव दर्शनका, दिखा दोगे तो क्या होगा ।
गही अब तो शरण तेरी, उवारोगे तो क्या होगा ॥ टेक ॥
सुनो श्री नाभिके नन्दा, परम सुख देन जग वन्दा ।
मेरी विन्ती अपावन की, विचारोगे तो क्या होगा ॥ १ ॥
फसा हूँ कर्मके फन्दे, मुझे तुम विन छुडावे कौन ।
तुम्हीं दातार हो जगमें, छुडा दोगे तो क्या होगा ॥ २ ॥
पें भवसागर अथाही में, झकोरे दुःखके निश दिन ।
मेरी है नाव अति झझरी, उतारोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥
अधम उद्धार पूरण के, सुमत की लेज टुक दीजे ।
कुमत के कूपतें अब तो, निकारोगे तो क्या होगा ॥ ४ ॥

(१९) गजल-कव्वाली ।

यही धन आजकी ये ही, सरा सब काज मो मनका ॥
गये अघ दूर सब भजके, लख्या मुख आज जिनवरका ॥टेक॥
विपति नासी सकल मेरी, भरा भंडार सम्पति का ।

सुधा के मेघ हू बरसे, लख्या मुख आज जिनवर का ॥ १ ॥
भई परतीत है मेरे, सही हो देव देवन के ।
कटी मिथ्यात्व की डोरी, लख्या मुख आज जिनवर का ॥ २ ॥
विरद ऐसा सुना मैं तो, जगत के पार करने का ।
'नवल' आनन्द हू पायो, लख्या मुख आज जिनवर का ॥ ३ ॥

(३०) तर्ज—रावण सुनों सुमति० ।

दर्शन दीजेजी जिनराज ! तुम शिवपुरके रहनेवाले ॥टेक॥
श्री पार्श्वनाथ महाराज ! तुम हो तारन तरन जिहाज ।
तुमरे सुमरत सुधरे काज; तुम शिव सुखके देने वाले ॥ १ ॥
पिता अश्वसेन भूपाल, माता वामाजी के लाल ।
सबसे तोड़ मोह का जाल, द्वादश तपके तपने वाले ॥ २ ॥
करके अष्ट कर्म को नाश, लीन्हा शिवपुर जी का वास ।
'ख्याली' करता है अरदास, मेरे दुःख के मेटने वाले ॥ ३ ॥

(३१) तर्ज—रावण सुनों सुमति० ।

दर्शन दीजे परसनाथ ! सबके काज सुधारन वाले ॥ टेक ॥
नैया मेरी पड़ी मझधार, ताके खेवट है मतवार ।
मैं हा हा खाऊं अपार, मेरे काज सँभारन वाले ॥ १ ॥
चलिये मन्दिरजी को आप, जपलें नन्दीश्वर की जाप ।
वे तो देते मुक्ति हैं आप, त्रिलोकी के ओहदे वाले ॥ २ ॥
ऐसे ही खता कीजिये माफ, जैसे राम चढ़ाया चांप ।
जिससे हो जावे दिल साफ, सबको जगसे तारनवाले ॥ ३ ॥
कहते हैं 'खुशालीराम' धर्मका ऐसे चला वो नाम ।
जैसे जीभ रचावे पान, सब वस्तु के देने वाले ॥ ४ ॥

(३२) तर्ज—रावण सुनो सुमति०।

सन्मति भव सागर के मांहि, नैया पार लगाने वाले ॥ टेक ॥
आये पावापुर के बीच, मारे वैरी आठो नीच।
अपने धनुष ध्यान को खींच, कर्म के कोट उड़ानेवाले ॥ १ ॥
लेकर चक्र सुदर्शन ज्ञान, करके मिथ्या मत को भान।
जितना कर 'न्यामत' परवान, मुक्ति की राह बताने वाले ॥ २ ॥

(३३) लावनी-देश, तर्ज—तुम पर वारनाजी० ॥

तन मन सारे जी सांवरिया, तुम पर वारनाजी ॥ टेक ॥
बालापन में कमठ निवारो, अग्नि जलता नाग उबारो।
वैरी कर्मन तुमने मारो, तप बल धारना जी ॥ १ ॥
जीवाजीव द्रव्य बतलाये, सब जीवन के भ्रम मिटाये।
शिव मारग आपहि दर्शाये, दुख परिहारना जी ॥ २ ॥
स्याद्वाद सप्त भंग सुनायो, नय परमान निश्चय करवायो।
झूटे मत किये खंडन, सत को धारना जी ॥ ३ ॥
'न्यामत' जिन पारस गुन गावे, पुनि २ चरनन सीस नवावें।
वीतराग सर्वज्ञ तुही, हित कारना जी ॥ ४ ॥

(३४) दादरा-थियेटर।

प्रभु लीजो खबरिया हमारी जी ॥ टेक ॥
[शैर] मुझको कर्म डुबोते हैं इस मोह ताल में।
इससे बचाओ मुझको करूं अर्ज हाल में ॥
करो पार नवरिया हमारी जी ॥ १ ॥ निद्रा अनादि बीच पड़ा मैं ही तो सोता हूं। सुमरन न कीनी तिहारी यों ही वक्त खोता हूं ॥ सुध लीजो सांवरिया हमारी जी ॥ २ ॥
तुम जग को त्याग जाय बसे मुक्त द्वार में। दिखलाओ राह मुझ कहूं बार २ मैं। दी मोक्ष डगरिया हमारीजी ॥ ३ ॥

मुझ पर दया करो प्रभु होकर दयालु तुम । मुकेवन है तुम्हारा दास करो प्रतिपाल तुम । नहिं तुम बिन गुजरिया हमारीजी ॥ ४ ॥

(३५) दादरा-थियेटर।

लीजो २ खबरिया हमारी जी ॥ टेक ॥

(शैर) धोके से आ गये हैं कुमतिया की चाल में ।

रक्खा है हमको बाँध के कर्मों के जाल में ॥ लीजो० ॥

बीता अनादि काल हाल कह नहीं सकते ।

जो दुःख हमें दिये हैं वह अब सह नहीं सकते । लीजो० ॥

तन धन का नाथ कुछ भी भरोसा मुझे नहीं ।

माता पिता भी कोई सगाती मेरे नहीं ॥ लीजो० ॥

सच है कहा संसार में कोई न किसी का ॥

'न्यामत' को सिवा तेरे भरोसा न किसी का ॥ लीजो० ॥

(३६) दादरा-पलन० ।

झूलें श्री वीर जिनेन्द्र पलना । त्रिशला देवी के ललना ॥ टेक ॥

कचन मनिमय रत्नजडितवर । रेशम डोरीके फन्द पलना ॥ झूलें०

चित्र खचित झल्लर मुतियनकी । दुति लखि लाजत चन्द पलना ॥ झूलें

श्री ह्रीं आदि झुलावें प्रेम धरि । गावें मंगल छन्द पलना ॥ झूलें०

छप्पन कुमारि खडी इत उतमें । ढोरें चमर आनन्द पलना ॥ झूलें०

मुलकि २ पग हाँथ चलावत । विहसत मन्द सुमन्द पलना ॥ झूलें०

निरखि २ छवि लखत 'हजारी' । थकित सुरासुर वृन्द पलना ॥ झूलें०

(३७) भजन ।

धरो है प्रभु बाना मोहन रूप ॥ टेक ॥

मान मुकुट माया पीताम्बर चक्र क्रोध उपजाना ।

लोभ रूप अभूषण त्याग, जैसे चीर पुराना ॥ मोहन० ॥

मोहनमाला मोह रूप की आसा अंगुस्ताना । कर कंचन ग्रह वन्दन तोड़े, ममता कुण्डल काना ॥ भोग धनुष की चंप

उतारी तोरयो मनमथ माना। तिलक भय रूप भुजा छेद कर डारो, मिथ्या जाने गरुड विमाना॥ 'सन्तलाल, मन बस्यो निरन्तर ऐसो रूप सुहाना। जाके दरश परश चरननते होने परमकल्याना॥

(३८) तर्ज--अरे उतरनार कर २ श्रगार।

प्रभु तार तार, भवसिन्धु पार, संकट मझार
तुमही आधार दुक दोष हार, तारो तारो मोरी नैया॥ टेक॥
परमाद चोर कियो हमरै जोर' भवसिन्धु तोर, दियो मझमें बोर, तुम समान और न, तारन तरैया॥ मोहि दण्ड २, दियो दुख प्रचण्ड, कर खण्ड २, चहुगति में भंड, तुम हो मरंड, तारो गहि बहियां॥ दुख सुनन दास, तेरो उदास, मेरी काट फांस, दरो भवको वास, हम करत आस, तुमही जग उधरैया॥

(३९) दादरा-ठुमरी।

चिनहंसे रहो नहि जाय, बिना प्रभु पार्श्व की छवि केरे॥ टेक॥
आनन की दुति कोटिक लागे, चन्दा सूरज लजाय॥ १॥
नेत्र हजार किये सुरपति ने तऊ न त्रिपति अघाय॥ २॥
आनन्द] सों प्रभु के गुण गाऊं रोम रोम हरषाय॥ ३॥

(४०) दादरा-थियेटर का।

उबार मोरे स्वामी! भवदधि से कर मुझको पार॥ टेक॥
चहुंगति में रुलता फिरा मोरे स्वामी। दुखडे सहे हैं अपार॥ १॥
मिथ्या अंधेरा मगर मोहने घेरा, करमों के विकट पहार॥ २॥
सातों विषय क्रोध मद लोभ माया, आये लुटेरे दहार॥ ३॥
सम्पति की मड़ी भवर पडी है, वेगी से लेना उभार॥ ४॥

(४१) गजल-तर्ज-चाहे बोलो०।

चाहे तारो या न तारो चरणों में आपडा हूँ॥ टेक॥
तेरे दरशके को आया मन में तुही समाया, अति दीन हो खड़ा हूँ॥ १॥

सब जगत में फिर आया, शरना कहीं न पाया, तेरी शरन गिरा हूं ॥
निज दास जान लीजे, शिव गम बताय दीजे, बन २ भटक फिरा हूँ ॥

(४२) दादरा केहरवा।

तुहीं २ याद कर मोहि आवे दरद में ॥ टेक ॥
सुख सम्पति में सब कोई साथी, भीर पड़े भग जावे दरदमें ॥ १ ॥
भाई बन्धु और कुटुम्ब कबीला, तो मन ललचावे दरदमें ॥ २ ॥
प्रेम दिवाना है मस्ताना, सदा जिनन्द गुण गावे दरदमें ॥ तुही० ॥

(४३) कहरवा।

चेतो चेतनवा चेतन चतुर नर मेटो अनादी की भूल। धारो दया पर पीर विचारो, बोलो वचन सतवादी रहो, डारो चोरी के माथे पै धूल ॥ टेक ॥ हाथ सुमरनी बगल कतरनी, जिनके कुमतिया ऐसे बसे जैसे होवे रजाई में सूल ॥ १ ॥ मत न करो परनारी को संगति, छोटी बड़ी सम ऐसे गिनो जैसी माता बहिन सम तूल ॥ २ ॥ परिग्रह तष्णा त्यागो "नैनसुख" सुख राखो सुमति, तुम छोड़ो कुमति, क्यों बोवत पेड़ बबूल ॥ ४ ॥

(४४) दादरा-खेमटा।

मैं कैसे आऊं स्वामी तुम्हारे दरबार ॥ टेक ॥
भ्रमत २ मोहि बहु दिन बीते, अष्ट कर्म दुख देत अपार ॥ १ ॥
कहा करूं कहुँ ठोर न दीसे, लीना है तुम परम अधार ॥ २ ॥
तुम साहिब मैं सेवक तुम्हारो, जगत जलधि से लीजे उबार ॥ ३ ॥
दास 'हजारी, तुम पग सेवक, तुम दर्शन मेरे प्राण अधार ॥ ४ ॥

(४५) भजन।

जा देखो जग की कुटलाई, साँची कहतन होत लड़ाई ॥ टेक ॥
मन्दिर जात आलस बहु आवे, राई में सारी रैन गमाई ॥ १ ॥
मिथ्या मत अमृत सम पीवे, उपवास करत पीड़ा उठ आई ॥ २ ॥

भाँग तमाखू नित्य उड़ावें, आप देत खाँसी उठ आई ॥ ३ ॥
देन लेन में आप सयाने, दान की वेर दादा खिस आई ॥ ४ ॥
'मथुरा, कहै भाई बुरो न मानों, यह सब जग की रीत बताई ॥ ५ ॥

(४६) ईमन-श्याम कल्याण ।

तेरी शाँति छवि मेरे मन बस गई, नहिं रुचे और छवि नैननमें ॥टेक ॥
निर्विकार निर्ग्रन्थ दिगम्बर, देखत कुमति विनस गई ॥ १ ॥
थिर मिथ्यातम दूर करन को, चन्द कलासी दरश रही ॥ २ ॥
मानिक मन मयूर हरषन को, मेघ घटासी दरश रही ॥ ३ ॥

(४७) दादरा ।

नर भव पाय गमावे वृथा तू ॥ टेक ॥
कर शृंगार पहिर आभूषण, शील विना न सुहावे ॥ वृथा० ॥
गुरुविन ज्ञान सभा विन पंडित, अदया धर्म नशावे ॥ वृथा तू० ॥
गुण विन पुत्र नोन विन भोजन, कण्ठ विना जो गावे ॥ वृथा तू० ॥
गज विन दंत कंत विन नारी, निशि विन चन्द्र न भावे ॥ वृथा तू० ॥
याते श्रुत पढ ज्ञान बढ़ावो, सत गुरु सीख सुनावे ॥ वृथा तू० ॥

(४८) गजल-कव्वाली ।

विना प्रभू पार्श्व के देखे, मेरा दिल बेकरारी है ।
चौरासी लाख में भटका बहुतसी देह धारी है॥ टेक ॥
मुसीवत जो पडी मुझपर तुम्हीं ने खुद निहारी है ॥ १ ॥ घेरा मुझे कर्म आठों ने, गले जंजीर डारी है । विरद तारन सुना प्रभु को, हकीकत सब गुजारी है ॥ २ ॥ जगत के देव सब देखे, उन्होंके लोभ भारी है । कोई क्रोधी कोई लोभी, किसी के संग नारी है ॥ ३ ॥ तुम्हीं प्रभु देव देवन के, विपति सबकी निवारी है । 'सेवक'को कुगतिसे टारो, यही विन्ती हमारी है ॥

(४९।) लावनी।

नर होनहार होतव्य न तिल भर टरनी.
भई जरद कुवर के हाथ मौत गिरधर की ॥ टेक ॥
श्री नेमनाथ निज आगम यह उच्चारी, भई बारह वरष विनाश द्वारका सारी। बचे फक्त श्री बलभद्र और गिरधारी, गये निकल देश से कन्थ तृपा अधिकारी। भये निन्द्रा वश वन बीच निवत्ती हर की ॥ १ ॥ गये नीर भरन बलभद्र न नियरे पाया, धर भेष शिकारी जरद कुवर वहां आया। लख पीताम्बर रग पीत पद्म दर्शाया, जब मृगा जात जदुवंश ने बान चलाया। लागत ही तीर उठ वीर पीर तरकस की ॥ २ ॥ त्रित चकित होत चहुं ओर विचारें मन में. किन मारा वैरी बाण आय यह वन में। यह वचन सुनत जदुकुवर विलखते तन में, श्री नेमनाथ जिन वचन लखे द्रग मन में। होनी से शक्त न होवे गए सुन नर की ॥ ३ ॥ ले आये नीर बलभद्र तीर नरपत के, लख हाल भये बेहाल देख भूपति के। षट् मास फिरे बलदेव मोह वश भ्रम के, दिया तुंगीगिर पर यहं दाह बोध चित धर के। कहे 'हरजन' के सुन वाणी यह जिनवर की ॥ ४ ॥ नर होनहार० ॥

(५०.) गजल।

लीजिये सुध अय प्रभु ! अबतो हमारी इन दिनों ॥ टेक ॥
गर्दिशे दुनियाँ से हैगी, बेकरारी इन दिनों। आठ अरि जो आ पड़े हैं, कर दिया खाना खराब। वचन की सूरत नहीं इनसे हमारी इन दिनों ॥ १ ॥ गुस्सा गर्रा बुराज लालच-स नही मुझ को पनाह। हो गई बन बनके तबियत—को खराबी इन दिनों ॥ २ ॥ क्या करूं किससे कहूं, कहाँ बचके इनसे जाऊं मै। कोल्हू कैसे बैल जैसी, गत हमारी इन दिनों ॥३॥

तुमको विन जाने दयानिधि, चार गति भ्रमता रहा। अब तो कदमों की शरण; लीनी तुम्हारी इन दिनों ॥४॥ तुम गरीब निवाज़ हो, अरु मैं गरीबों का गरीब। जग उद्धारक की विरद, आहर है थारी इन दिनों ॥५॥ सख्त आफत में फसा हूं, अये मेरे मुशकिल कुशॉ। कर दो मुशकिल सख्त को, आसान मेरी इन दिनों ॥६॥ अपनी महफ़िल आली का, दीजे जरा रस्ता बता। 'मथुरा' की ख्वाहिश बरारी, होगी पूरी इन दिनों ॥७॥ लीजिये सुध अय प्रभु० ।

(५१) भजन।

स्वारथ को संसार जगत में, स्वारथ को संसार ॥ टेक ॥
विन स्वारथ कोई बात न पूछे, देखा खूब विचार जगतमें ॥स्वा०
पिता कहे मेरा पुत्र सुपौत्र, अकलवन्त होशयार जगत में ॥स्वारथ०
सुन्दर नारी वस्त्र अभूषण, मांगत बारम्बार जगत में ॥ स्वारथ०
पुत्र भये नारिन के वश में, नित्य करत तकरार जगत में ॥स्वारथ०
अपना २ हक्क बटाकर, हो गये नियारा न्यार जगत में ॥ स्वारथ०
'परमानंद' छोड़ जग ममता, हो गये जग उद्धार जगत में ॥स्वारथ०

(५२) गजल—कव्वाली।

आज जिनराज दर्शन से, भयो आनन्द भारी है ॥ टेक ॥
लहे ज्यों मोर घन गर्जे, सुनिधि पाये भिखारी है। तथा मो मोद की वार्ता, नहीं जाती उचारी है ॥१॥ जगत के देव सब देखे, क्रोधमय लोभ भारी है। तुम्हीं दोपावरण विन हो, कहा उपमा तिहारी है ॥२॥ तुम्हारे दर्श विन स्वामी, भई चहुँ गति में ख्वारी है। तुम्हीं पद कंज नमते ही, मोहकी धूल झारी है ॥३॥ तुम्हारी भक्ति से भव जन, भये भव सिन्धु पारी है। भक्ति मोह दीजिये अविचल, सदा याचक, 'विहारी' है ॥ आज जिनराज० ॥४॥

(५३) लावनी।

चार तरह के जैनी जग, में तिनकी तुम सुन लेव भाई।
जिनकी अव पहिचान करो जा, वात याद हमको आई॥ टेक॥
पहले जैनी सुन लेव भाई, दरशन प्रभु के नित्य करें।
व्रत्त-आंकड़ी पालें समकृत, दया जीव की हिरदे धरें॥
तीन काल सामायिक साधें, अपने हित की चाह धरें।
जे हैं सदईयां जैनी भाई, पहिचानो अरजी गाई॥ टेक॥

दोहा—दरशन प्रभु के नित करें, व्रत-आकड़ी जान।
जैनी सदईयाँ जानियो, पाँचों पद को ध्यान॥

दूजे जैनी सुन लो भाई, भादों में दरशन करते।
कुल पद्धति की रीति जनम से, मन्दिर में आते डरते॥
वारह महिना नहिं आवे वे, येही सरधा मन में धरते।
भादों में सरस्याते आवें, दश दिन मुशकिल से कटते॥
जे हैं भदईयाँ जैनी भाई, पहिचानो अरजी गाई॥ टेक॥

दोहा—भादों में दरशन करें, आवे मन्दिर वीच।
जैनी भदईयाँ जानिये, धरें पापकी कीच॥टेक॥

तीजे जैनी की सुनो हकीकत, कजिया किस्सा होय भाई।
ले पंचायत जाय मन्दिर में, लरे भिरें काढ़ें गारी॥
ऐसे तो वो मतलव काजें, आवें अपने हितकारी।
और तरह नहिं आवें मन्दिरमें, सूरत तिनकी है न्यारी॥
जे हैं लरईयां जैनी भाई, पहिचानो अरजी गाई॥ टेक॥

दोहा—कजिया किस्सा होय तव, ले पंचायत सोय।
मन्दिर में आवें जवै, तव सुरझौता होय॥ टेक॥

चौथे जैनी और विकट हैं, मन्दिर को वे नहिं आवें।
घर को जव मरजाय, पाँच पंचन को लेकर तव आवें॥

ऐसे दरशन करें जनम से, क्या कारण वे जन्म धरें।
और तरह नहिं आव मन्दिरमें, गमी होय तो जब आवें॥
जे है मरहँयाँ जैनी भाई, पहिचानो अरजी गाई॥ टेक॥

दोहा—मंदिर जाने है कहा, नहीं धरम से चाह।
मंदिर को आवें जबै, जब घरको मर जाय॥

टेक—कहैं खूब चारों में उत्तम, होवें उनकी चाल चलो।
जैसे कुल में वैसे ही हूहै, चाल चले जो होय भलो।
अष्ट कर्मसे भई खराबी, चेतन अब तुम कर्म दलो॥
एक धरम पल्लेमें राखो, चहुँगतिके दुखमें न सलो।
पाँच चौककी बना लावनी, मजलिसमें है यह गाई॥ टेक॥

दोहा—बड़तन को वे बड़ गये, जैसे पेड़ खजूर।
पाँच नाम सुमरे नहिं, मुखमें परिवे धूल॥

(५४) लावनी।

सुनों प्रभुजी अर्ज हमारी, मेरा काज तुम से अटका।
भवसागर में रुला फिरा हूं, लख चौरासी में भटका॥ टेक॥
गर्भ वेदना सही जो मैंने, औंधे मुंह करके लटका।
गर्भ कूप से मुझे निकाला, फेर जमीं में धर पटका॥ टेक॥
बालापन अरु तरुण अवस्था, वृद्धपने में है झटका।
तीनों पन मैंने यों खोये, पाप लिये आया अटका॥ टेक॥
अष्ट कर्म ने खूब नचाया, ऊपर से मारा सटका।
जो फल किये सो ही फल पाया, ख्याल गमाया है नटका॥ टेक॥
दीन दयाल दयानिधि स्वामी, चरन शरनका है चशका।
हाथ जोरकर करूं मैं विन्ती, यही मिटा मेरा खटका॥ ४॥

(५५) तर्ज—अरे रावण तू धमकी० ।

कभी करके दया जिनराज मुझे छवि अपनी जो आप दिखा देते।
मेरे ज्ञानका सूर्य उदित करते, भ्रम तमकी घटाको हटा देते ।टेक॥
छविकी प्रभुता क्या वर्णन करूं, जाने इन्द्र विभूतिको छार किया ।
दिखलाके अनूपम दर्श मुझे, अब मुक्ति के मग में लगा देते ॥ २ ॥
सभी जलते यह अघ, समकित मिलता भव पावन हो तासे जाता ।
मैं विनय करत-कर जोर प्रभु अब मोक्ष इसेभी मिला देते ॥ ३ ॥

(५६) तर्ज—दादरा ।

चलिये २ जिनेश्वर बन्दनको । हम आये हैं पाप निकन्दनको ॥ टेक ॥
[शैर] गंगादि नीर से भरी हैं हेम झारियां कुम कुमादि नीर से भरी हैं प्यालियां ॥ १ ॥ अक्षयपद के कारने भरी हैं थालियाँ । चम्पा गुलाब केतकी लीन्हीं है डालियाँ ॥ २ ॥ नैवेद्य गुन्ज फैनी घेवरादि रस भरे । कपूर को प्रजाल के हम आरती करें ॥ ३ ॥ धूप दशांगी खेवत ही कर्म सब जरें । बदाम लौंग श्रीफलादि भेंट हम करें ॥४॥ इन सबको मिलाय के अर्घ हम किया । रक्खो "चिमन" की लाज सभी काज हो गया ॥

(५७) दादरा ।

जागो चेतन पिया, देखो कबकी खड़ी ॥ टेक ॥
मोह की सेज अनर्थ की चादर, संगमें दासी सोवे पड़ी ॥ १ ॥
जात न पात छुटत छुटाये, प्रीत लगाई थी कैसी घड़ी ॥ २ ॥
ज्ञानकी बरसा रिमझिम बरषे, श्रीजिन धुन धन लागी झड़ी ॥ ३ ॥
ध्यान हिंडोले हम तुम झूलें, पहरके रत्नोंकी मुक्ता लड़ी ॥ ४ ॥
सुमति पुकारे बोलो 'मंगत' अबभी न बोलो तो गफलत बड़ी ॥ ५ ॥

(५८) मल्हार ।

परम गुरु बरसंत ज्ञान झरी,

हरष हरष बहु गरज गरज के मिथ्या ताप हरी ॥ टेक ॥

सरधा भूमि सुहावनी लागे संयम रीति हरी । भवि जन मन सरवर भर उमड़े, समक्त पवन सियरी ॥ १ ॥ स्याद्वाद नय बिजली चमकी, परमत शिखिर परी । चातक मोर साधु श्रावक हैं, हिरदे भक्ति भरी ॥ २ ॥ जिन नित परमानन्द बढ़ो है, सुसमय नीव धरी । 'द्यानत' पावन पावस पायो थिरता सुधर घरी ॥ ३ ॥

(५९) सिन्ध ।

स्वामी मुजरा हमारो लीजे ॥ टेक ॥

तुम तो वीतराग आनन्द घन, हमको ऐसा कीजे ॥ १ ॥

जग के देव सब रागी द्वेषी, याते निज गुण दीजे ॥ २ ॥

आदि देव तुम समान को, देश अचल पद दीजे ॥ ३ ॥

(६०) लावनी ।

सखी री चल गढ़ गिरनारी, जहाँ श्रीनेम विरतधारी ॥

जाय कर अरज करूँ भारी, लेऊ जिन दीक्षा भवतारी ॥ टेक ॥

पशुवन की करुणा उन कीनी छाँड़ि गिरनारि दीक्षा लीनी ।

दोहा—मात तात तुम क्यों रोकते हो, तज देउ नेहा मेर ।

भाई बन्धु अरु कुटुम कबीला, सब परवारिन घेर ।

न मेरा जगमें प्यारी ॥ १ ॥ हाथ से कंगन भी तोड़ा, दामिनी बिन्छिया भमकोरा । शीश से शीशफूल छोड़ा, बाँहसे भुजबाजू तोड़ा

दोहा—दुलरी तिलरी पचलरी, दीनी सबे उतार ।

मोहनमाला नथ अरु लटकन, दिया धरन पर डार ॥

मालमोतिन की तोड़ारी ॥२॥ चीर दक्खिन का तज दीना, स्वेत सिर पट ओढ़ लीना । सबै परिवार छोड़ दीना, प्रभुके चरनन चित दीना

दोहा—एक अर्ज़ मैं करूं प्रभु से, सुनो नाथ मेरी बात।
जो तुम प्रभुजी जोग लिया है, मैं जोगिन तुम साथ।
भजन करिहों तुम ढिंगठाढ़ी ॥ जायकर ।अणुव्रत लिया भारी, तपस्या करी घोर भारी। देव ललितॉग योनिधारी, फेर नहिं पावे जन्मनारी
दोहा—बाइस सागर आयु भोग के फेर धरे वैराग।
सेवक जनकी अर्ज फिर, सिद्ध हुआ महाराज।
धन्य है या जग में नारी ॥ ४ ॥

(६१) गजल–क़व्वाली।

तुभ्यं नमस्ते स्वामी शांति जिनन्दाजी। दृग देखे परमानंद, मुख पूनम चन्दाजी ॥ टेक ॥ जन्मे जिन शांति सुधारी जग फेरी निवारी जी। प्रभु तीन ज्ञान हितकारी निरदेही धारी जी ॥ १ ॥ तुम विना कोई न मेरा तुम साहेब मेरा जी। हरो मिथ्या शोक हमारा, काटो भव के फेरा जी ॥ २ ॥ तुम दीन दया जग पाला, लालन के लाला जी। मैं दास जपों गुणमाला, धर हिरदैं लीना जी ॥ ३ ॥ तुम कल्पवृक्ष हितकारी, चिन्तामणि धारी जी। प्रभु पूरो आस हमारी, फ़िर खुशी तुम्हारी जी ॥ ४ ॥

(६२) दादरा–भैरवी।

लीजो खबरिया हमारी दयानिधि ॥ टेक ॥
तुम दीन दयाल जगत के सब जीवन हितकारी ॥ १ ॥
मो मतिहीन दीन तुम समरथ चूक माफ कर म्हारी ॥ २ ॥
'भूधरदास' आस चरनन की भव २ शरन तिहरो ॥ ३ ॥

(६३) ध्रुपद–चौताल।

प्रभु धन्य २, जग मन्य २, तुम हो प्रसन्न,
हम लिये जन्म, तुम सम न अन्य, जग जन हितकारो ॥ टेक ॥
सुनिये जिनेन्द्र, कीजे हूं सुरेन्द्र, ये मम उपेन्द्र, आये गजेन्द्र,

चलिये जिनेन्द्र॰ कीजे न्हवन तैयारी ॥ १ ॥ हो जगत भान, कृपा निधान, मोहि लो पिछान, सौधर्म्म जान, सुरपति ईशान, ये है संग हमारी ॥ २ ॥ सन्मतिकुमार, माहेन्द्र, सार ज्यु सुर अपार, चारों प्रकार, मो तो लेकैं तार, तोरी सेवा उर धारी ॥३॥ हे दीनबन्धु, हे दयासिन्धु, मैं मिहरचन्द॰ तोहि बन्दि, लूंगो उछंग, कीजें गज असवारी ॥ ४ ॥ नहिं करी देर, गये गिर सुमेर, पाँडुक बनेर, पांडुक सिलेर, लाय जाय घेर, ताकी पूजा विस्तारी ॥ ५ ॥ भरी भारी वारि, कलसा हजार, प्रभु शीस डारि, जिन गुण उचारि, करि जै जैकार, अरु कीनी विधि सारी ॥ ६ ॥ कहि मिष्ट बैन, हरि मात सैन, करि सुजस ऐन, लगे गोद दैन, भई सुख नैन, मानो फूली फुलवारी ॥ ७ ॥

(६४) बधाई।

आज तो बधाई राजा नाभिके द्वार री ॥ टेक ॥

मरुदेवी घर बेटा जायो ऋषभकुमार री, अजुध्यामें उच्छव बाडे बोले जै जैकार री ॥ १ ॥ घनघनन घंटा वाजे देव करे मुख थेई २ कार री, इन्द्राणी सब मंगल गावैं लावे मोतीमाल री ॥२॥ चंदन चरचे पायं लागू प्रभू जीवो चिरकाल री, नाभि राजा दान देवे वर्षे अखंडित धार री ॥ ३ ॥ हाथी देवे साथी देवे रथ देवे तुखार री, हीर चीर पीताम्बर देवे देवे सब श्रृंगार री ॥ ४ ॥ तीन लोक में दिनकर प्रगटे घर २ मँगल चार री, केवल कमला रुप निरंजन आदीश्वर दयाल री ॥ ५ ॥

(६५) तर्ज—यह कैसे बाल बिखरे ह यह सूरत क्या बनी गमकी ।

तुम्हारा चन्द्र मुख निरखे, सुपद रुचि मुझको आई है । ज्ञान चमका परापरका, मुझे पहिचान आई है ॥ टेक ॥ कला बढ़ती है बुद्धि की, काम रजनी बिलाई है । अमृत

आनन्द शासन ने, शोक तृष्णा बुझाई है ॥ जो इष्टानिष्ट में मेरी, कलपना थी नसाई है। मैंने निज साध्यको साधा, उपाधि सब मिटाई है ॥ धन्य दिन आजका 'न्यामत', छवी जिन देव पाई है ॥

(६६) तर्ज—मूगा तुझे छे दूगा सजनी ।

महावीर महाराज ! दया कर कष्ट हरो प्रभु जी ॥ टेक ॥
सीता सती द्रोपदी रानी; लज्या राखी चीर बढ्यो ॥ १ ॥
बेड़ा हमारो पार लगैयो, भव सागर मँझधार पर्यो ॥ २ ॥
श्रीपाल को उदधि से उबारो, रैन मंजूषाको शील खरो ॥ ३ ॥
संकट है अब दास छबीले, दुःख हरो भव पार करो ॥ ४ ॥

(६७) तर्ज—राजा मग मति मारो सरजू के तीर ।

राजा जोग मत धारो २ गिरवर जी के तीर ॥ टेक ॥
काहे की कमनिया बनाय लई २ काहे के दोनों तीर ॥ १ ॥
ध्यान की कमनिया बनाय लई २ ज्ञानके दोनों तीर ॥ २ ॥
बारह जो भावन भावें २ उपजौ ज्ञान शरीर ॥ ३ ॥
'विधिचन्द्र' दोऊ कर जोरें २ मेटो कर्म जंजीर ॥ ४ ॥

(६८) तर्ज—जरा से बालमा मुदरी को नगीना रे ।

बिन देखे रहो नहिं जाय, बिना प्रभु पारसकी छविके रे ॥ टेक ॥
आनन की द्युति कोटि के आगे, चन्दा सूरज लजाय ॥ १ ॥
नेत्र हजार किये सुरपति ने, तऊ न त्रपति अघाय ॥ २ ॥
आनन्द सों प्रभु के गुन गाऊं, रोम २ हरषाय ॥ ३ ॥

(६९) तर्ज—महबूब जानी आवे, लालों की जोड़ी लावे ।

तुमरे चरण में स्वामी ! यह मन लगा है मेरा ।
छिन २ तुम्हें नमामि, सब दुख भगा है मेरा ॥ टेक ॥
मरुदेवी नन्द चंदा, जिन नेम धर्म कन्दा । नृप नाभिरायनंदा; क्यों अघ मगा है मेरा ॥१॥ बसु कर्मको जलाया, त्यागी जगतकी माया।

शिवपुरका मग लगाया, श्राव अब जगाहै मेरा ॥ करके दया दयाला, कीजे मुझे निहाला। विषयोंने मार डाला, प्रभु धन ठगा है मेरा ॥

(७०) तर्ज—जोवन की मदमाती डोलै री गुजरिया।

जिनवरजी मोहिंदेव दरशनवा ॥ टेक ॥

विरद निहारो मैं सुन आयो, अब मो मन तुम करो परसनवा ॥१॥
मोह तिमिरके दूर करनको, नाहिं दिवाकर तुम सम अनवा ॥२॥
अब 'सेवक' हितकर गुण गावे, उमंग २ परसे चरननवा ॥ ३ ॥

(७१) दादरा।

गिरनारी डगरिया बताय दीजो रे ॥ टेक ॥

जंगल झाड़ी विकट बनो छे, मोहि भूलोसी डगर बताय दीजो रे ॥
बीस टोंक पर बीस जिनेश्वर, मोहि ऊंचीसी टोंक बताय दीजो रे ॥
ठाड़ी राजुल अर्ज करत हैं, मोहि प्रभुके दरश दिखाय दीजो रे ॥

(७२) दादरा।

जिया जिनजी से ध्यान लगाना रे ॥ टेक ॥

प्रभु सुमरेसे पाप कटत हैं, मन वाँछित फल पाना रे ॥ १ ॥
पद्म प्रभुजी से प्रीति करे नर, शिव रमनी सुख पाना रे ॥ २ ॥
'परमोदयकी' यही अरज है, जामन मरन मिटाना रे ॥ ३ ॥

(७३) दादरा।

आज कोई अद्भुत रचना रची ॥ टेक ॥

प्रभु, समोशरण शोभा देखनको, होडा होड़ी मची ॥ १ ॥
स्वर्ग विमान तले छवि जाके, देखत मनन खिची ॥ २ ॥
जिन गुण स्वादत रसिया पन की, रीझ न जात मची ॥ ३ ॥
'नवल' कहे ऐसी मन आवे, हर्ष धार कर नची ॥ ४ ॥

(७४) तर्ज—मत दे दान जिमीको रे राजा वलि।

थारो भरोसो भारी मुझे जिन ॥ टेक ॥

भवसागर में डूबत प्रभुजी लीन्ही शरण तुम्हारी ॥ १ ॥

तुम प्रभु दीनदयाल दयानिधि, मैं दुखिया संसारी ॥ २ ॥
तुम जग जीव अनन्त उधारे, अबकी बार हमारी ॥ ३ ॥
'नैन सुख' प्रभु हमारी नैया अटक रही मझधारी ॥ ४ ॥

(७५) तर्ज—यह नाथ ! अपनी दयालुता, तुम्हें याद हो कि न याद हो।

मेरी नाव भवदधि में पडी, कर पास अब सुन लीजिये।
जग-बन्धु वामा नन्दसे, पुकार अब सुन लीजिये ॥ टेक ॥
है झाझरी नैया मेरी, मझधार गोते खा रही। वसु कर्म वायु झकोरता, जग तार अब सुन लीजिये ॥ १ ॥ गति चार जलचर जहं बसें मुख फाड़ २ डरावते। तिनसे बचाओ दीनपति, इस बार अब सुन लीजिये ॥ २ ॥ भव जल अथांहीमें मेरा, तुम बिन नहीं है दूसरा, मेरी बांहको गहि ले प्रभु ! चित धार अब सुन लीजिये ॥ ३ ॥
सब कार्ज अब मेरे भये, घट राम रत्न खुशाल है।
दिन रैन जिनवर नामका, आधार अब सुन लीजिये ॥ ४ ॥

(७६) तर्ज—रघुबर कौशल्याके लाल, मुनि का यज्ञ रचानेवाले।

भगवान मरुदेवी के लाल, मुकतकी राह बतानेवाले।
राह बतानेवाले सबका भर्म मिटानेवाले ॥ टेक ॥
लीना अवधपुरी औतार, छा गयो जग में आनदकार।
बोलें सुर नर जय जयकार, सारे जिन गुण गानेवाले ॥ १ ॥
जगमें था अज्ञान महान, तुमने दिया सबोंको ज्ञान।
करके मिथ्या मतका भान, केवल ज्ञान उपानेवाले ॥ २ ॥
तुमने दिया धरम उपदेश, जामें राग द्वेष नहिं लेश।
तुम सत ब्रह्मा विष्णु महेश, शिव मारग दरशानेवाले ॥ ३ ॥
जग जीवन पे करुणाधार, तुमने दिया मंत्र नवकार।
जिससे होगा भवदधि पार, लाखों निश्चे लानेवाले ॥ ४ ॥
बैरी करम बड़े बलवीर, देते सब जीवोंको पीर।
'न्यामत' हो रहा अधम अधीर, तुम ही धीर बंधानेवाले ॥ ५ ॥

(७७) तर्ज–अरे लाल देव इस तरफ जल्द आ ।

अरे प्यारे सुन तू जरा देके कान, कि जिनबानिसे जीव पाता है ज्ञान॥टेक मिटानी है संशय यही जीवको, अगर कोई दे इसपे टुक अपना ध्यान ॥ अरे० ॥ नहीं ठैरे अनमन कोई सामने, करे जब यह परमाण नयका बयान ॥ अरे० ॥ दिखाती है निक्षेप सत भंगका, स्यादवाद इसका निराला निशान ॥ अरे० ॥ बनावे परमातमा जीव को जो, निश्चे करें देवे शिव बे गुमान ॥ अरे० ॥ परीक्षासे सिद्धि करे वस्तुकी, बनाती नहीं यूँही लाना ईमान ॥ अरे० ॥ धरम अर्थ शिव काम चारों मिले, जो 'न्यामत' कोई इसको ले ठीक जान ॥ अरे० ॥

(७८) तर्ज–अधिक सहप रूपका दिया न जाग मोल ।

कर सकल विभाव अभाव मिटा दो, विकलपता मनकी ॥ टेक ॥
आप लखे आपेमें आया, गत व्योहारन की ।
तर्क वितर्क तजो इसकी, और भेद विज्ञानन की ॥ कर० ॥ १
यह परमातम यह मम आतम, बात विभावनकी ।
हरो हरो बुध नय प्रमाण की, और निक्षेपन की ॥ कर० ॥ २
ज्ञान चरन की विकलप छोड़ो, छोड़ो दरशन की ।
'न्यामत' पुदगल हो पुदगल, चेतन शक्ति चेतनकी ॥ कर० ॥ २

(७९) तर्ज–अधिक सहप रूप का दिया न जाग मोल ।

जय जय श्री अरहंत आस हम पूजनको आये ॥ टेक ॥
काम सरा सब मो मनका जब तुम दरशन पाये । मेघ सुधा से हो बरसे हम बहु आनद पाये ॥ जय० ॥ १ ॥ यही भई परतीत मेरे तुम देवनके देवा । जनम जनम के अघ कट गये मेरे तुम दरशन पाये ॥ जय० ॥ २ ॥ नारद ब्रह्मा और सभी मिल तुमरे गुण गाये । नरपत सुरपत नित तुम ध्यावे वांछित फल पाये ॥ जय० ॥ ३ ॥ इन्द्र धनेन्द्र सभी मिल आये शिर चरनन नाये । 'न्यामत' जनम सुफल कर मानो तुम दरशन पाये ॥ जय० ॥

(८०) तर्ज-इलाजे दर्दे दिल तुमसे, मसीहा हो नहीं सकता।

प्रभू की भक्ति काफी है, शिवा सुन्दर मिलाने को ॥ टेक ॥
छुडा दामन कुमति से तू, जो शिव सुन्दर को चाहै है।
तुझे आई है रे चेतन, सखी सुमती बुलाने को ॥ प्रभू० ॥ १ ॥
जगा मत मोह राजा को, पड़ा है ख्वाब गफलत में।
बनाले ध्यानकी नौका, भवोदधि पार जाने को ॥ प्रभू० ॥ २ ॥
तुझे अब 'न्यामत, कोई, अगर रहबर नहीं मिलता।
तो ले चल संग जिनवानी, तुझे रस्ता बताने को ॥ प्रभू० ॥ ३ ॥

(८१) तर्ज-सदा नहीं रहनेका मेरे यार हुस्न पर यूंही अकड़ते हो।

मिले तुमको भी नहीं आराम जो तुम औरोंको सताते हो ॥टेक॥
दया धरमको छोड़ पापमें जिया लगाते हो। दुख देते हो औरों को खुद भी दुख पाते हो। क्यों होकर चेतन चतुर सुजान निपट मूरख बने जाते हो ॥ मिले० ॥ १ ॥ क्रोध लोभ मद मायाके वश में आजाते हो। दया भावको त्याग प्राण प्राणी के गुमाते हो। तुम्हारा हो कैसे कल्यान, जीव औरोंका दुखाते हो ॥ मिले० ॥२॥ तप संजम और पूजा भक्ती ज्ञान ध्यान अशनान। जिनके हिरदे दया नहीं है सब झूठा तोफान। निमाज रोजा और इमान, यूहीं करके दुख पाते हो ॥ मिले० ॥ ३ ॥ अबके जीवजान अपना सम और करुणा मन धार। वेद कुरान पुरान सबों का समझो ये हीं सार। दया बिन नहिं होगा कल्यान, जनम व्यर्थ ही गमाते हो ॥ मिले० ॥ ४ ॥ कर पूजा मन्दिर में घड़ी घड़याल बजाते हो। जो दिल में नहीं दया यूंही पाखँड रचाते हो। प्रभू को है सबही का ज्ञान, उसे क्या धोखा दिलाते हो ॥ मिले० ॥ ५ ॥ हिंसाही से होता है दुनियाँ में दुख पाप। काल कूट और प्लेग समझ लो हिंसाका परताप। रसातल जाता हिन्दुस्तान, दया चितमें नहिं लाते हो ॥ मिले० ॥६॥

राग द्वेषको छोड़ 'न्यामत' तज दो हिंसक भाव। दया धरम मनमें भजो भव क्या जोगी क्या राव। दयासे हो सबका कल्यान, जो मारन सुत कहलाते हो ॥ मिले० ॥ ७ ॥

(८२) तर्ज-थियेटर में नाच होते समय।

अरि आवो, शुभ घड़ियाँ मनावो री। मनावो री मनावोरी। अरी आवो शुभ घड़ियाँ मनावो, शुभ घड़ियाँ मनावो, शुभ घड़ियाँ मनावोरी ॥ टेक ॥ घर घरमें आनन्द छाय रह्यो है। श्रीजीपै वारो, बनाय गुलकलियाँ, बनाय गुलकलियाँ, बनाय गुलकलियाँ। मनावोरी ॥ अरी आवो ॥ १ ॥ गावो बजाओ, हाव भाव दिखावो, जय जय जिनेन्द्र सुनावो रल मिलियाँ, सुनावो रल मिलियाँ, सुनावो रल मिलियां, सुनाओ रल मिलियाँ, सुनावो रल मिलियाँ ॥ मनावोरी० अरि आवो० ॥ २ ॥ छुम छुम छुम छुम नाच नचाओ। ताल बजाओ बजाओ मन भरियां। बजाओ मन भरियाँ, बजाओ मन भरियाँ ॥ मनावोरी० ॥ अरि आवो० ॥ ३ ॥ मुक्ति चिदानन्द नाटक रचावो, करमों की धूल उड़ाओ, गलि गलियां उडाओ, गलि गलियाँ उडाओ, गलि गलियाँ ॥ मनावोरी० ॥ अरि आवो० ॥ ४ ॥ अमृत पर भावना दिया जैनपानी। पीवो पिलाओ दिखाय छल बलिया। दिखाय छल बलियाँ, दिखाय छल बलियाँ ॥ मनावोरी० ॥ अरि०

(८३) तर्ज—राजा हूं मैं कौनका और इन्दर मेरा नाम।

चेतन आनन्द रूपजी, सुनो हमारी बात। तू राजा तिहुँ लोकका, है जगमें विख्यात ॥ १ ॥ जिनबानी माता तेरी, गहो चरण चित लाय। पद जाके सेवे सदा, इन्द्र चन्द्र शिरनाय ॥ २ ॥ करुणा सब पर कीजिये, दिलमें दया विचार। दया धरम का मूल है, यह निश्चय उरधार ॥ ३ ॥ एक संवर दो निरजरा, शुभ आश्रव मिल चार। यह चतुरंग सेना बनी, जिसका वारन पार

॥ ४ ॥ समकित है सेनापती, मँत्री ज्ञान निहार। ज्ञान-सुता ममता सती, है तेरी पटनार ॥ ५ ॥ गुण अनन्त हैं कोषमें, कोषाध्यक्ष सुदान। अन्नोषधि नित दीजिये, अभय दान औ ज्ञान ॥६॥ ज्ञान सुमति की सीखमें, रहना चतुर सुजान। यह हितकारी हैं तेरे, सुखकारी दुखभान ॥७॥ सत्यारथ उपदेश यह, दीनो श्रीजिनराज। 'न्यामत' मन निश्चय करो, मिले मुक्तिका साज ॥ ८ ॥

(८४) तर्ज—अधिक सरूप रूप का दिया न जागा मोल।

अरे यह क्या किया नादान तेरी समझपै पड़ गई धूल ॥ टेक
आम हेत तैं बाग लगाओ वो दिये पेड़ बबूल।
अरे फल चाखेगा रोवेगा क्या रहा है मन में फूल ॥अरे० ॥१
हाथ सुमरनी बांह कतरनी निज पद को गया भूल।
मिथ्या दर्शन ज्ञान लिया रहा समकित से प्रतिकूल ॥ अरे० ॥२
कंचन भोजन कीच उठाया भरी रजाई शूल।
'न्यामत'सौदा ऐसा किया जामें ब्याज रहा न मूल ॥ अरे० ॥३

(८५) ये कैसे बाल बिखरे हैं यह सूरत क्या बनी गमकी।

अहो जगबन्धु जगनायक, अर्ज इतनी हमारी है।
कि करमों ने इस जगमें, आ हुरमत बिगारी है ॥ टेक
मैं इस भव वनमें फिर हारा, चतुर गति दुख सहे भारी।
कहूं मैं अपने मुंह से क्या, विपत जानो हो तुम सारी ॥ १
करम वैरी मुझे हर आन, मनमाना सताते हैं।
मनुष तिर्यंच सुर नारक में, अरहट ज्यू फिराते हैं ॥ २
लुटेरे सारी दुनियाँ के, ज्ञान धन हर लिया सारा।
पाप पुन पावों में बेड़ी, लगा तन बन्ध में डारा ॥ ३
सिंह वानर सरप शूकर, नवल सब तुमने तारे हैं।
ऊँच और नीच नहीं देखा, शरण आये तुमारे हैं ॥ ४

सुजश तेरा सुना तुम हो, हितू सबके विना कारन।
शरण आकर 'गही' न्यामत' उवारो हे तरण तारण ॥ ५ ॥

(८६) तर्ज-सुन सुन री भावी भैया को भेजू परदेश।

परदेसवा में कौन चलेगा तेरे लार ॥ टेक ॥
चलेगी मेरी माता चलेगी मेरी नार। नहीं नहीं रे चेतन आवेंगी दर तक लार ॥ परदेसवा० ॥ १ ॥ चलेगा मेरा भाई चलेगा मेरा यार। नहीं नहीं रे चेतन फूंकेंगे अगन मंझार ॥ परदेसवा० ॥ २ ॥ चलेगी मेरी माता की जाई मेरी लार। नहीं नहीं रे चेतन झूठा है सारा व्योहार ॥ परदेसवा० ॥ ३॥ चलेगा मेरा बेटा पिता परवार। नहीं नहीं रे चेतन मतलबका सारा संसार ॥परदेसवा०॥४॥ चलेगी मेरी फौज चलेगा दरबार। नहीं नहीं रे चेतन जीते जीकी है सरकार ॥ परदेसवा० ॥५॥ चलेगा मेरा माल खजाना घरबार। नहीं २ रे चेतन पड़ा रहेगा सब कार ॥ परदेसवा० ॥ ६ ॥ चलेगी मेरी काया चलेगा मानसार। नहीं २ रे 'न्यामत' छोडेंगे तोहे मझधार ॥ परदेसवा० ॥७॥

(८७) तर्ज—बूटी लाने का कैसा बहाना हुआ।

कैसे त्यागी का तुम ने निशाना किया कैसे त्यागी का ॥
मुझ को रुलवाय सारा जमाना किया ॥ कैसे ॥ टेक ॥
यह वैरागी महान, नहीं क्रोध और मान, करें आत्माका ध्यान,
तजे महलो मकान। आके जंगलमें अपना ठिकाना किया ॥ कैसे०
दान मुक्तीका सार, सारे नर और नार, माथे हाथ पसार।
करें सबका उपकार, नहीं छोटे बड़े का बहाना हुवा ॥ कैसे० ॥
इनको निरगी न जान, ऐसा होके अयान, मत खेंचे कमान।
मत खो इनकी जान, दिलसे दया को रवाना किया ॥ कैसे० ॥
सच जानो सुवीर, होगी नरकोंमें पीर, मेरे मनको न धीर।

मैं तजूंगा शरीर, तुम जोगीका इस दम निशाना किया ॥ कैसे ॥
सुनके शील सुजाव, डरा मनमें अज्ञान, डारे तीरो कमान।
जगा हिरदेमें ज्ञान, भद्रकाली को लेकर पयाना किया॥ कैसे० ॥
मुनि चरमन मझार, गिरे भील और नार, लेके शील अवकार।
महावीर, 'न्यामत' उपकार जमाना किया ॥ कैसे० ॥

(८८) तर्ज–जल कैसे भरू नदिया गहरी।

दुख कासे कहूँ कलजुग भारी, कलजुग भारी, कलजुग भारी ॥ टेक॥
दया धरम हिरदे नाहीं। करें जीव घात हिंसा सारी॥ दुख० ॥
शील गया भारत में से। कर दिया नियोग कुपथ जारी॥ दुख० ॥
झूठ वचन निशदिन बोलें। करें कपट दूत चोरी जारी ॥ दुख० ॥
किस विध सुख होवे प्यारे। करो काम महादुख अधिकारी ॥दुख०॥
हमदरदी किस विध होवे, लड़ें आपस में दे दे गारी॥ दुख० ॥
भारत क्यों ना दुखी होवे। तजा जैन धरम सब सुखकारी। दुख०॥
तजा पक्षपात जिनमत देखो। नहीं रागद्वेष सब हितकारी॥ दुख० ॥
तजो आलस पुरुषार्थ करो। सुधरे बिगड़ी भारत सारी ॥ दुख० ॥

(८९) तर्ज--रघुवर कौशल्याके लाल, मुनिका यज्ञ रचाने वाले।

रावण सुनो सुमति हिय धार सती सीताके चुराने वाले।
सीताके चुरानेवाले कुलको दाग लगानेवाले ॥ रावण० ॥ टेक ॥
रानी थी दश आठ हजार। लाया क्यों हरकर परनार।
तजकर धरम सकल सुखकार। शीलकी बाढ़ हटानेवाले ॥ रावण० ॥
थी तुझ को सीतासे प्रीत। लाया क्यों न स्वयम्बर जीत।
यह थी छत्रीपन की रीत छत्री नाम लजानेवाले ॥ रावण० ॥
जो सोना लेनी थी ठान। लाया क्यों नहिं सम्मुख आन।
तुम तो जोधा थे बलवान। गिर कैलाश हिलानेवाले ॥ रावण० ॥
जाकर दंडक वनके बीच। सूनी लाये सीता खींच।

कीना काम नीच से नीच । बने नरकोंमें जानेवाले ॥ रावण० ॥
होना था सो हो गया वैर । उलटी दे दो सीता फेर।
अच्छा नहीं रामसे वैर। 'न्यामत' कहते कहनेवाले ॥ रावण० ॥

(९०) तर्ज—घर मे यहा कौन खुदाके लिये लाया मुझको।

हाय इन भोगोंने क्यों रंग दिखाया मुझको।
ये खबर जगत के धन्दों में फंसाया मुझको ॥ टेक ॥
मैं तो चेतन हूँ निराकार सभी से न्यारा। दुष्ट भोगों ही ने करमों से बँधाया मुझको ॥ १ ॥ नींद गफलत से मेरी आँख कभी भी न खुली। भोग इन्द्री औ विषयोंने भुलाया मुझको ॥ २ ॥ ज्ञान धन मेरा हरा रूप दिखाकर अपना। योनि चौरासीमें भटकाके रुलाया मुझको ॥ ३ ॥ अब न सेऊंगा कभी भूलके इन विषयों को। 'न्यामत' जैन धरम अब तो है पाया मुझको ॥ ४ ॥

(९१) तर्ज—मासूर हूं शोखी से शरारत से भरी हूं।

चेतन हूं निराकार हूं, हर बातका ज्ञाता। पर क्या करूं जग यक़े से फन्दमें फसा हूँ ॥ १ ॥ शक्ती है कि करमों को मैं, इकदम उड़ा दूं। लाचार हूँ इस मोह की, नागन से डसा हूँ ॥ २ ॥ क्या अस्ल है करमोंकी मेरे, तेजके आगे। इक छिन के छिन में ध्यानकी, अगनीसे जला दूं ॥ ३ ॥ अब आन गही 'न्यामत' जिन शर्ण तुम्हारी। अरदास यही है कि मैं करमों से रिहा हूँ ॥ ४ ॥

(९२) तर्ज—जिया तू तो करत फिरत मेरा मेरा।

जिया तूने कैसी कुमत कमाई ॥ टेक ॥
नौ दश मास गरभ में बीते नरक योनि भुगताई।
अँधकूप से बाहर आयो मेल रह्यो तन छाई ॥ जिया० ॥
बालपने सब खेल गँवायो, तरुण भयो जुध आई।
कामबैन आँखों में छायो पिछली बात बिसराई ॥ जिया० ॥
क्रोध मान माया मद राच्यो जो सारे दुखदाई।

जम के दूत लेन जब आवें भूल जावै चतुराई ॥ जिया० ॥
धन्य भाग यह जान आपने उत्तम नर—गति पाई ।
उत्तम कुल में जन्म लियो है व्यर्थ काहे गँवाई ॥ जिया० ॥
जैन धरम 'न्यामत' तूने पाया पूरव करम सहाई ।
तज मिथ्यात्व गहो तनमन से जो जिन शासन गाई ॥ जिया० ॥

(९३) तर्ज—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सका।

विना भक्ति सुनो चेतन जगतमें तूने दुख पाया।
अरे अब तो समझ मूरख कि अवसर तेरा बन आया ॥ टेक ॥
अनंते काल नरकोंमें सहे दुखड़े बहुत तूने । गया अब भूल क्यों मूरख तुझे है मद क्या छाया ॥ विना० ॥ इक इन्द्रीसे पचेन्द्री तक पशु पँछीकी गति भोगी। कहीं जलचर कहीं नभचर समझ ले अब तो समझाया ॥ विना० ॥ सुरगमें भोग सरपन सँग बहुतसी सम्पदा पाई। लखा मुरझाई मालाको तू अपने मन में पछताया ॥ विना० ॥ मनुष्य भवमें गरभ माही उठाये कष्ट दुरगतिके। तरुण होकर फंसा विषयन काम आँखों में जब छाया ॥ विना० ॥ वृद्ध होकर करी ममता गँमाये तीनों पन अपने । भला पछताय क्या होवे काल जब वाक मुंह आया ॥ विना० ॥ भाग अन 'न्यामत' जानो कि उत्तम काया नर पाई । करो सरधान जिनबाणी ये जो जिनराज फरमाया ॥ विना० ॥

(९४) तर्ज—कत्ल मत करना मुझे तेगो तवर से देखना।

जबसे जिनमतको तजा हिंसक जमाना हो गया।
सबके दिल से भाव-करुणाका रवाना हो गया ॥ टेक ॥
झूठ चोरी औ जिनाकारी गई हृदयसे गुजार। पाप करते आप कलयुगका वहाना होगया ॥ जबसे० ॥ जीव हिंसा जिसमें है उसको कलाम ईश्वर कहें। हाय भारत आजकल बिल्कुल दिवाना हो गया ॥ जबसे० ॥ याद रखिये जीवहिंसा से नहीं होगी निजात। लाखोंको

हिंसासे है नरकोंमें जाना हो गया ॥ जयसे० ॥ एक दयासे दूसरे भी आपके हो जायगे। देख लो हिंसा से यह भारत विगाना हो ॥ जयसे० ॥ भाईसे भाई लडें हरगिज दया आती नहीं। फूटका दिलमें तुम्हारे क्यों ठिकाना हो गया ॥ जयसे० ॥ 'न्यामत' अब तो दयाका भाव दिलमें कीजिये। हिंसा करते २ तो तुमको जमाना होगया

(९५) तर्ज-इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सक्ता ।

जगत सब छानकर देखा पता सतका नहीं पाया ।
निजात होनेका जिनमतके सिवा रस्ता नहीं पाया ॥ टेक ॥
कोई न्हानेमें शिव माने कोई गाने में शिव माने। कोई हिंसा में शिव माने अजब है जाल फैलाया ॥ जगत० ॥ १ ॥ कोई मरनेमें शिव कहता कोई जरनेमें शिव कहता। दार चढनेमें शिव कहता नहीं कुछ भेद है पाया ॥ जगत० ॥ २ ॥ कोई लोभी कोई क्रोधी किसीके संगमें नारी । जटाधारी लटाधारी किसी ने कान फड़वाया ॥ जगत० ॥ ३ ॥ कोई कहता है मुक्ति से भी उलटे लौट आते हैं । अजब है आपकी मुक्ति मुक्त हो फिर वहीं आया ॥ जगत० ॥ ४ ॥ कोई ऐसा मान बैठा है मुक्ति ईश्वर के कबजेमें। शिफारिश विन नहीं मिलती यही है हमने फ़रमाया ॥ जगत० ॥ ५ ॥ कोई कहता है कुछ यारो कोई कहता है कुछ यारो । जो सच पूछो हैं दीवाने असल रस्ता नहीं पाया ॥ जगत० ॥ ६ ॥ अगर मुक्तीकी ख्वाहिश है तो जिनमत की शरण लीजे । पढ़ो तत्वार्थ शासन—जिसमें शिवमारग है वताया ॥ जगत० ॥ ७ ॥ नहीं यहाँ पै जरूरत है किसी रिशवत शिफारिश की । चला जो जैन शासन पै उसीने मोक्षको पाया ॥ जगत० ॥ ८ ॥ करम वन्ध तोडके 'न्यामत' वनो आजाद करमों से-। नहीं कोई रोकनेवाला रिषभ जिन ऐसा फरमाया ॥ जगत० ॥ ९ ॥

(९६) तर्ज—चरखा छे दे कमर के हिलाने को।

कूंजी देले घड़ीके चलानेको। चलानेको शिव जानेको ॥ टेक ॥
पाँचों ही इन्द्री बनी पाँच सुई। यदी नेकी की बातें बनानेको ॥ कूंजी
मनका फनर ज्ञान गुणकी कामिनी। तेरा चेतन है चक्कर फिरानेको ॥ कूंजी
सत्य धरमकी फूंक लगावो। यही काफी है पुरजे हिलानेको ॥ कूंजी
करमोंकी रजसे घडीको बचावो। सदा रखना विवेक बचानेको ॥ कूंजी
सम्बरका ढकना लगावो घड़ी पै। निरजन करो मैल हटानेको ॥ कूंजी
सुमतिकी घंटी घड़ी पै लगी है ख्वाव गफलतसे तुझको जगानेको ॥ कू.

(९७) तर्ज—मुस्लमा होने को अय किबला में तैयार नहीं।

वेधरम दुनियां में जीके हमें करना क्या है।
लेके अपजश जो मेरे यार तो मरना क्या है ॥ टेक ॥
काल टाला नहीं टलता है किसी का यारो। जब यह तय होही चुका फिर तो झगडना क्या है ॥ वेधरम० ॥ नजर आता है नहीं जीव को शरणा कोई। आपको आप शरण और का शरण क्या है ॥ वेधरम० ॥ देहको छोड़ेंगे तो देह नई पावेंगे जीव मरता है नहीं मरने से डरना क्या है ॥ वेधरम० ॥ कर पर—उपकार मरे बाद रहेंगे जिन्दा। नाम जिनका रहे जिन्दा उन्हें मरना क्या है ॥ वेधरम० ॥ राम रावण से बली भीमसे जोधा प्यारे। सारे ही खाक हुए हमको अकड़ना क्या है ॥ वेधरम० ॥ जिन्दगी का तो नहा कुछ भी भरोसा न्यामत करले जो करना है फिर अन्त में करना क्या है ॥ वेधरम० ॥

(९८) तर्ज—इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता।

विना सम्यक्त के चेतन जनम विरथा गँवाता है।
तुझे समझाएं क्या मूरख नहीं तू दिल में लाता है ॥ टेक ॥
अथिर है जग की सम्पत समझले दिल में अय नांदॉ। राव

और रद्द होने का यूँही अफसोस आता है॥ विना० ॥ १ ॥ ऐश इशरत में दुख होवे कहीं दुख में महा सुख हो। क्यों अपने में समझता है यह सब पुद्गल का माना है॥ विना० ॥ २॥ विनाशी सब तू अविनाशी इन्हों पै क्या लुभाता है। निराला भेष है तेरा तू क्यों पर में फंसता है ॥ विना० ॥ ३॥ पिता सुत बन्धु और भाई सहेली सँग की नारी। स्वारथ की सभी यारी भरोसा क्या रखता है ॥ विना० ॥ ४ ॥ अनादि भूल है तेरी स्वरूप अपना नहीं जाना। पड़ा है मोह का परदा नजर तुझे कौन आता है ॥ विना० ॥ ५ ॥ है दरशन ज्ञान गुण तेरा इसे भूला है क्यों मूरख। अरे अबतो समझले तू चला संसार जाता है॥ विना० ॥ ६॥ तू चेतन सबसे न्यारा है भूल से देह धारा है। तू है जड में न जड़ तुझ में तू क्या धोके में आता है ॥ विना० ॥ ७॥ जगत में तूने चित लाया कि इन्द्री भोग मन भाया। कभी दिल में नहीं आया तेरा क्या जग से नाता है ॥ विना० ॥ ८ ॥ तेरे में और परमात में कुछ नहीं भेद अब चेतन रतन आतम को मूरख काँच बदले क्यों बिकाता है॥ विना० ॥ ९ ॥ मोह के फन्द में फंसकर क्यों अपनी न्यायमत खोई। करम जंजीर को काटो इसी से मोक्ष पाता है ॥ विना० ॥ १०

(९९) तर्ज—अमोलक जैन धर्म प्यारे, भूल विषयों में मत हारे ॥

फजूल खर्चीको तजो प्यारे। बिगड गये लाखों धन वारे ॥टेक॥ ब्याह किया मन तोडकर हो बैठे कंगाल। रंडी भडुवे कर दिये दे जर मालामाल। अजब ही मूरख मतवारे॥ फजूल० ॥ १॥ नामवरीके वास्ते भूर फैंक बहु फीन। पीछे हाट दुकान की हुई एक दो तीन ॥ पड़े औंधे सब नक्कारे ॥ फजूल० ॥ २॥ काज रचाया नामको, करके जोड़ अनेक। काम बिगाड़ा आपना

मानी कही न एक। फिरैं अब तो दर दर मारे ॥ फजूल० ॥ ३ ॥ लड़का जब पैदा हुआ खूब लुटाया माल। चाहे चच्चा और सुत भूक मरें बेहाल। मगर हो नाम एक वारे ॥ फजूल० ॥ ४ ॥ विद्या पढ़नेके लिये कहें कहाँसे आय। बद रसमोंमें बन्दकर आवें लाख लुटाय। बना दिये हैं मूरख सारे ॥ फजूल० ॥ ५ ॥ मूरख बन चोरी करें करें मास-मद्पान। जुवा गणिका संगमें करें धरम की हानि। पड़ें दुख सागर मझधारे ॥ फजूल० ॥ ६ ॥ फजूल खर्ची कारने बढ़ा पाप अति घोर। काल प्लेग अब हिन्दमें छाय गया चहुँ ओर। हुवा भारत गारत प्यारे ॥ फजूल० ॥ ७ ॥ अब तो आंखें खोल ये भारत सुत परवीन। नहीं दो दिनमें देखना हो कौड़ी के तीन। कहें 'न्यामत' हितकी प्यारे ॥ फजूल० ॥ ८ ॥

(१००) तर्ज—आहा प्यारा दिन है, न्यारा शहजादेकी शादीका।

आहा प्यारा दिन है न्यारा जनमऋषभ जिन आदिका। सब सखियन मिल मंगल गावें, दिन है मुवारिक वादीका ॥टेक॥ स्वर्ग मझारी हुई तय्यारी आये सब झन नन झूम। धनपत ऐरावत रचलाय धन नन नन नन धूम ॥ आहा० ॥ १ ॥ सब सुरनारी देदे तारी नाचे छन नन छूम। ताल संजीर वीन बाँसरी बज रही तन नन तूम ॥ आहा० ॥ २ ॥ जल थल बन बन आनन्द घन घन छाये घन नन घूम। सुख रस बूंद रिम झिम बरसै झन नन नन नन झूम ॥ आहा० ॥ ३ ॥ सब दुख हारे पाप निवारे दया धरम की धूम। जय जयकार मची तिहूं जगमें धन धन भारत भूम ॥ आहा० ॥ ४ ॥ सुरासुर आवें फूल बरसावें झन नन नन नन झूम 'न्यामत' प्यारो वादे बहारी चल रही सन नन सूम ॥ आहा० ॥

(१०१) तर्ज—किसमत सबपर लाती आफत।

तूं हितकारी नाथ जगतका महिमा तेरी अपरमपार। सबके हितु तुम सब जीवन को शिवमग दरसाया सुखकार। सूरज

चन्दर इन्दर सुर नर गावें सब तेरा उपकार ॥ खन्डन कर पाखन्ड जगत के दिखलाया सतका व्यौहार । सब भ्रम मिटा दिया॥ सता सत दिखा दिया । मोह—तम हटा दिया ॥ रसते लगा दिया । तेरे नाम को रटें ॥ मिथ्यातसे हटें । पापों से हम छुटें ॥ 'न्यामत' करम कटें । तू हितकारी० ॥ १ ॥

(१०२) तर्ज–हुवा सुन राम दशरथके बहादुर हो तो ऐसा हो ।

न द्वेषी हो न रागी हो सदानन्द वीतरागी हो ।
वह सब विषयोंका त्यागी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ टेक ॥
न खुद घट घट में जाता हो मगर घट घटका ज्ञाता हो । वह सत उपदेश दाता हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥ न करता हो न हरता हो नहीं औतार धरता हो । मारता हो न मरता हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो० ॥ २ ॥ ज्ञान के नूरसे पुरनूर हो जिस का नहीं सानी । सरासर नूर नूरानी जो ईश्वर हो तो ऐसा हो० ॥३॥ न क्रोधी हो न कामी हो न दुश्मन हो न हामी हो । वह सारे जगका स्वामी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥४॥ वह जाते पाक हो दुनियाँ के झगड़ों से मुबर्रा हो । आलि मुल गैब होवे ऐब ईश्वर हो तो ऐसा हो० ॥५॥ दयामय हो शाँत रस हो परम वैरागी मुद्रा हो । न आबिर हो न काहिर हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥६॥ निरंजन निरविकारी हो निजा-नँद रस विहारी हो । सदा कल्याणकारी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो० ॥ ७ ॥ न जग जँजाल रचता हो करम फलका न दाता हो । वह सब बातोंका ज्ञाता हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो० ॥८॥ वह सच्चिदानंद रूपी हो ज्ञानमय शिव स्वरूपी हो । आप कल्याण रूपी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो० ॥९॥ जिस ईश्वरके ध्यान सेती बने ईश्वर कहे न्यामत । वही ईश्वर हमारा है जो ईश्वर हो तो ऐसा हो० ॥ न द्वेषी० ॥ १० ॥

(१०३) तर्ज—दिले नादा को हम समुझाय जाएंगे।

हम तो जिन बानी सब को सुनाय जाएंगे।

मानो न मानो यह मंशा तुम्हारी॥ न समझानेसे हमतो बाज़ आएंगे॥ ॥ हम ०॥ यह जिनवानी जो पाखंड का सब नाश करे। झूठे मसलों को हटा सत्य का परकाश करे। सिदूक दिल से जो कोई सुनने की अरदास करे। करमों को काटके मुक्ति में वह जो वास करे। फिर न दुनियाँ के झगडोंमें रगड़ोंमें लोट आएंगे ॥ हम० ॥ न्याय परमानसे तत्त्वोंको दिखाया इसने। जग अनादी है स्वयम सिद्ध जिताया इसने। भ्रम करता का था न्यामत को हटाया इसने। करता हरता है यही जीव बताया इसने। सदा इसके ही धन्यवाद गुणवाद गाए जाएंगे ॥ हम० ॥

(१०४) तर्ज—लगालो जान जाना से तो जाना ही मुनासिब हो।

हुकम हमको पिताका अब बजाना ही मुनासिब है।

अवध को छोड़ जंगल में जाना ही मुनासिब है ॥ टेक ॥ नहीं है रोसका मौका सुनो लक्षमण मेरे भाई। मात केकैके आगे सर झुकाना ही मुनासिब है ॥ हुकम० ॥१॥ अवधके तख्त पर अब तो नहीं बैठूगा मैं हरगिज़। ताज मेरा भरतके सर सजाना ही मुनासिब है ॥हुकम०॥२॥ धनुष तुमने जो चिल्ले थे चढ़ाया है बिना समझे। धनुषको चापसे उलटा हटाना ही मुनासिब है ॥हुकम०॥३॥ राजके वास्ते भाई न भाई से लड़ेंगे हम। वचन राजा का अब हमको निभाना ही मुनासिब है ॥ हुकम० ॥ ४ ॥ हुआ भारत सभी गारत पड़ी जो फूट आपस में। कहे न्यामत फूट को अब मिटाना ही मुनासिब है ॥ हुकम० ॥ ५ ॥

(१०५) तर्ज—कोई ऐसी सखी चातुर न मिली मोहे० ॥

अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे मुझे मरनेका खौफ़ खतरही नहीं। मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना तुझे होनेकी अपनी खबरही नहीं॥टे.।

क्या तूं सोनेकी लङ्काका मानकरे वह मेरे आगे मिट्टीका घरही नहीं।
मेरे मनका सुमेरु हलेगा नहीं मेरे मनमें किसी का डरही नहीं ॥ अरे०
तूने सहस्र अठारा जो रानी वरीं हाय उनपर भी तुझको सबर ही नहीं।
पर तिरिया में तूने जो ध्यान किया क्या निगोदो नरकका खतर ही नहीं
अरे० आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिलके सभी क्या मजाल जो शील
को मेरे हते। तेरी हस्ती है क्या सिवा राम पिया मेरी नजरों में
कोई पत्थर ही नहीं अरे० क्यों न जीत स्वयंवर तू लाया मुझे
मेरी चाह थी मन में जो तेरी बसी। था तूं कौन शहर मुझे देतो
पता जहां स्वयंवर की पहुँची खबर ही नहीं अरे० हुवा सो तो
हुवा अब मान कहा मुझे राम पै जलदी से दे तू पठा। कहे 'न्यामत,
वगरने तू देखेगा यह तेरे सर की कसम तेरा सर ही नहीं॥ अरे०

(१०६) तर्ज—इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सक्ता।

अरे चेतन उठो उठकर चलो दरबार अपने को।
बुलाकर ज्ञान को जल्दी करो दरबार अपने को ॥ टेक ॥
मगर यह याद रख लीजो कुमत का संग मत कीजो।
वगरना फिर इसी हालत में तुम पावोगे अपने को ॥ अरे० ॥ १ ॥
श्री अरहंत हैं सच्चे सुनो सरकार दुनियाँ में।
सदा सरको झुकाते तुम रहो सरकार अपने को ॥ अरे० ॥ २ ॥
हुकुम जो कुछ दिया सरकार ने तत्वार्थ—शासन में।
करो पाबन्द उन अहकाम का दरबार अपने को ॥ अरे० ॥ ३ ॥
कहा अपना समझ कर के कोई पर को नहीं कहता।
कोई कहता है तो कहता है 'न्यामत, यार अपने को ॥ अरे० ॥ ४ ॥

(१०७) तर्ज—जिसने एक बार मुझे, मोह-जबीं देख लिया।

जैसा जो करता है भरता है यहीं देखि लिया।
करम का टाला नहीं टलता है फल देख लिया ॥ टेक ॥
बदसे बद नेक से नेकी का समर मिलता है। आज जो जैसा

किया वैसा ही फल देखलिया ॥ जैसा० ॥ हरके सोना को जो रावण ने कुमत ठानी थी। आप मारा गया हरने के बदले देख लिया ॥ जैसा० ॥ 'न्यामत, जो कोई कलपाता है जी औरों का। याद रक्खो वह भी पाता है नकल देख लिया ॥ जैसा० ॥

(१०८) तर्ज-नाटककी-ऐसे तुझसे ऐ ऐं गैर मने लाखों देन्दे भाले।

सेवें तेरा दरबार मुनी ज्ञानी ध्यानी सारे।

स्वर्गों मांहीं इन्द्र सारे। भू मन्डल के प्रानी सारे। क्या सूरज क्या चन्दर तारे ॥ तेरा० ॥ तुमसे अपना दुख जिनलानेको जो आते हैं जो आते हैं। वह तेरे दरसे सुगती मुक्ती पाते हैं वह पाते हैं आवो आवो जलदी आवो। मतना इसमें देर लगाओ। ओ जिन आगे शीश झुकावा देखो देखो एकदम। होवे मिथ्या भाव कम। आवो मन माहीं सम वढ़े संजम सम दम। अजी आवो आवो देखोभालो शिवनगरी को जानेवाले ॥ तेरा० ॥

(१०९) लावनीं।

कँ क गिरदी का गिरदी कर २ विचार, मँ म गिरदी म गिरदी मंदिर मापन वं व गिरदी व गिरदी वेदीके सुदिन, स स गिरदी सं गिरदी श्री स्थापन ॥ टेक वं व गिरदी वृक्ष नाना प्रकार के ल्याते फं फ गिरदी फा गिरदी फानूस झाड़ वनवाते। जं ज गिरदी २ जुरु २ समाज गुन गाते। पं प गिरदी प गिरदी पारस प्रभु को सब ध्याते ॥ [झेला] मन्दिर के मध्य में सोहैं, रचना विचार तहाँ जो हैं। वैठक विमान तहां सोहैं, भव जीवन का मन मोहें ॥ कं क गिरदी क गिरदी करते है चैन, धँ ध गिरदी ध गिरदी धरते ध्यायन ॥ टेक जं ज गिरदी जन्म जब लिया होत आनन्दे अं अ गिरदी इन्द्र जब आय आन कर वन्दे। ठँ ठ गिरदी उठा ले गये कै परवत इन्द्रे। कं क गिरदी कलश हजार आठ सिर वुन्दे। [झेला] । जब इन्द्र हुकम को दीना इन्द्रानी गोद में लीना।

सिंगार बहुत विधि कीना माता को सौंप फिर दीना।
नं न गिरदों न गिरदी निरत कोन, गं ग गिरदीं ग गिरदी करते गायन ॥ टेक स स गिरदीं स गिरदी जहां बजत साज। गं ग गिरदी ग गिरदी करते गायन। मं म गिरदी म गिरदी मोचंग बाज। पं प गिरदी प गिरदी पाइल पाइन। सं स गिरदो स गिरदी जहाँ बजत सारंगी, फिरक २ फिरकी खायन। न न गिरदी इन्द्र जब निरत कीन उड २ आकाश फिर २ जायन ॥
[झेला] बैठ२ विमानों धाये सब देव तहाँ सुर आये रितरके फूल बरसाये, प्रभू चरणोंको शिर नाये। अं अ गिरदी अ गिरदी स्तुती करके, सॅ स गिरदी सगिरदी सुरपुर जायन ॥ टेक कं क गिरदी कोपर अष्ट द्रव्यन के, म म गिरदी मंगल पढ़ों श्रीजिनवरके। दॅ द गिरदी दर्शन करें दुख घे हरें दास अपनेके। पं प गिरदी पूजाकरें सुख होय दुःख मिटें तनके॥
[झेला] पूजा का फल यह आना जिन किआ तिन्होंने जाना। मेंढक को सुर्ग भयो धाता प्रभु चरणों से लौ लाना ॥ मॅ म गिरदी 'मोहन' की अर्ज, पॅ प गिरदी प गिरदी प्रभुके पायन ॥ टेक॥

(११०) लावनी।

त्रिया जनम मत दियो प्रभूजी अरज करूं दुःखभरी भरा।
जनम गमायो सुख नहिं पायो सॅकट में गये तीनों पन ॥ टेक ॥
बालापन की सुनो प्रभूजी जिस दिन धरनी लिया जनम। मात पिता सब उदास हो गये मुख मोड़े सब लोग कुटुम्ब। टूट गई बालक की आशा नेग चार छूटे उस दिन। जब जो भई दो चार बरष की मात सिखावन लागी संग ॥ टेक ॥ जुवानीपन की सुनो प्रभूजी नौ महिना का गर्भ रहा। एकसेएक पीर जब आई, तब मुख देखा बालक का। बड़ी कठिनसे बालक पाया, छूट गई सबरी ममता। उस बालक का व्याह जो कर दयो, लगा दई सब जमा पता। ॥ टेक ॥ वृद्धापन की सुनो प्रभू जी, घर में ज्वान भये बेटा। उन बेटोंकी बहुयें आई लड़ २ कर लेतीं हिस्सा। हाथ जोड़ कर कहै 'जवाहर' भूल न हो त्रिया का जनम ॥

(१११) भजन।

कहा कर लीनो नर भव पाकें, प्राणी मोह महा मद छाकें ॥ टेक ॥ अशुच घत्र मल मूर लपेटें रहो अंग में छाकें। बालापन ख्यालन में खोयो धोके में रहे लड़का कें ॥ १ ॥ तरुणपने इन्द्रन के वश में भोगे भोग अघा कें। विरध भयो सो रहो त्रसना वस हुपा सेठ मो वाकें ॥ २ ॥ ते नई या धर्म विन भोंदू या विधि काल गमाकें। कौड़ी एक कमाई नाहीं उत्तम कुल में आके ॥ ३ ॥ कारज एक सुधारो नाहीं चले गाँठ को खाके। 'देवीदास,' कहत आपुन से औरन को समझाकें ॥४॥

(११२) भजन।

जिय काल घटा देह सदन चावने लगी चावने लगी, जिय डरवाउने लगी ॥टेक॥ यह विरधा पने वाव सरित वादरा उठे जोर। अहि दूसरी त्रस्ना पवन चलत चहुँ ओर। त्रय योग चपल चपला चमकाउने लगी ॥ १ ॥ मिथ्यात निश अन्धकार लगी रोग की झड़ियां। यह आयु बीती जात है घड़याल की घड़ियाँ। दुरगति विरूप सलता जो नहावने लगीं ॥ २ ॥ नरभव सुकुल सु शैली बड़ी भाग तें पाई। जिनवाणी परम औषधि नित सेवो रे भाई। कर 'मानक,' परतीति जासों सकल भय भगी ॥ ४ ॥

(११३) लावनीं।

सुन सप्त व्यसन का स्वरूप न्यारा न्यारा।
इनके त्यागे विन नहिं होगा निस्तारा ॥ टेक ॥

ये जुआ सप्त व्यसनों में महा अन्याई। इसका है खेल इस परभव में दुखदाई। देय राजा दंड काढ़ें मात पिता अरु भाई। जुवारी की कोई कर सकता नहिं सहाई। जो जुवा खेल पाँडवों ने लिया दुख भारी ॥ १ ॥ यह मांस भक्ष अति निंद्य भव्य जे जानों। इक कनमें अनन्ते जीव जिनेन्द्र बखानो। निर्दई

हैं जिनके हाथ जीव हत्यानों। करकस वायस जो गृद्ध चील को खाना धिक् हैं तिनको जे मन में लीन उचारा ॥ २ ॥ मद्य पानी पिय आतम की ध्वार करते हैं। माता भगिनी धीये कुदृष्टि धरते हैं। दर्शन ज्ञानादिक गुण का मूल हरते हैं। भिष्टादिक भोजन पै लड २ मरते हैं। मधु पीके आप आपुन को डगें रे गवारा ॥ ३ ॥ वे स्याने धन के कारण प्रीति घटानी ॥ नीचों के संग नहिं रमते करें गिलानी। नरकों में तपन पुतली से कराते प्यारा ॥ ४ ॥ जे पहले हुए शशभीत मृगा वनचारी। नहिं करें पराये दोष जे वना अहारी। धन खोही पास इक देह मात्र के धारी। सब वनचर में निरदोष जे परें अहारी। हाय २ रे दुष्ट करौं करो प्रहार विचारा ॥ ५ ॥ चोरी के करनेवाले दुःख पाते हैं। राजा के द्वारे पाँव काटे जाते हैं। प्राणों से प्यारे धन को हरलाते हैं। खोटे करम से नरकादिक में जाते हैं। सुत तात मात भाई न करें हितकारा ॥ ६ ॥ परनारी में जिसने कुदृष्टि दीनी है। उसने अपजश की पोट शीस लीनी है। जिसके वश रावण को दुर्गति भीनी है। धन्य २ हैं उनको जिनने नीची नजर कीनी है। 'मोहन' को चूककर माफ जैन का प्यारा ॥ ७ ॥

(११८) भजन।

या दिन का करसी शोच जिया मन में ॥टेक॥

बनज किया वेपारी तूने टाड़ा लादा भारी रे। ओछी पूंजी जुआ खेला आखिर बाजू रे। आखिर बाजू हारी वे कर चलने की तैयारी रे। इक दिन डेरा होयगा वन में ॥ टेक ॥ झूठे नैनों उलझत घड़ी, इक दिन पवन चलेगी आंधी। किसका सोना किसकी चाँदी। नाहक चित्त लगाया तन में ॥ १ ॥ मिट्टी से मिट्टी मिलेगी, पानी से पानी वे। मूरख सेती मूरख मिलियो, ज्ञानी से ज्ञानी वे। यह मिट्टी है तेरे तन में ॥ २ ॥ कहत 'बनारसी'

सुनो भाई प्राणी, यह पद है निर्वाणा वे। जीवन मरण की आशा नाहीं, सिर पर काल निशाना वे। सूझ पड़ेगो बुढ़ापेपन में ॥ ३ ॥

(११५) भजन।

अज हूं न चेतो चतुर नर तेरा तीसरा पन जात है।
पल घड़ी दिन दो चार में यमराज तोको खात है ॥
मैं मे करत सब दिन गयो सोवत गई सब रात है।
जिनराज को सुमरे नहीं बहुर फिर नहीं दाव है ॥ टेक ॥
बालापन ख्यालन में गया, जुवानी गई मद मान में। बिरधा पनै अब जात है नर बहुर फिर पछतात है ॥ १ ॥ यह काल है विकराल खोटी जगत जीव गिसजात है। याते सकारे चेत स्याने जनम बीतो जात है ॥ २ ॥ सम्पति इकट्ठी जोर के नर ताह सेती पतयात है। दान पूजा करत नाहीं जोर के धर जात है ॥ ३ ॥ दान पूजा कर भविक जन हरष के गुन गाय के। कहत उदयाजीत, प्रभु जिन जजहु मेरे मन भात है ॥ ४ ॥

(११६) भजन।

धन २ साधर्मी जन मिलन घरी। जहाँ बरसत भ्रम ताप हरन ग्यान घन भरी ॥ टेक ॥ जाके बिन पाँयें विपत अति भरी निज परहित अहित की कछु न सुध परी ॥ १ ॥ जाके परभव चित्त सुथिरता करी। संशय भ्रम मोह की कुवासना टरी ॥ २ ॥ मिथ्या गुरू देव सेव टेव पर हरो। वीतराग देव सुगुरु सेव उर धरी ॥ ३ ॥ चारों अनुयोग सहित देश दिढ परी। शिव मग के लाह की भी चाह विस्तारी ॥ ४ ॥ सम्यक तरु धर न यह किरन का हरी। भव जल को तरन शरण यह भुजंग विष भरी ॥ ५ ॥ पूरव भव या प्रकार मन शिव वरी। सेवो अब याह 'दौल' बात है खरी ॥

(११७) भजन।

ऐसे करम बड़े बलवान जगत में पेरत हैं। पवनञ्जय की रानी अँजना

गर्भ विषैं हनुमान। सगी मात ने दियो निकारो किस विधि राखो प्राण ॥ टेक ॥ घरने निकसी चली माँयके मात पिताके गुमान। भाई बन्धु ने बात न पूछी नेक न कियो सन्मान ॥१॥ बार २ वे कहँ अंजना दीरघ लेत उसाँस। कहो सखी अब कैसी करिये टूट गई मोरी आस ॥२॥ उनसे निकसीं बन को चालीं बीच मिले मुनिराज। पूर्व भव की सुध जो कराई रोम २ हरषाय ॥ ३ ॥ 'भूदलदास' कहत भव जन मे चेतन अवध सुधार। प्रभु को नाम तरन तारन है कर्म फन्द निर्वार ॥ ४ ॥

(११८) लावनी।

मान करो मत भूल मान में हान तेरी हैगी निश दिन ॥ जिन २ कीना मान प्राण तज गये आर वेभी नरकन ॥ टेक ॥ मान करो लङ्कापत रावन नार राम की हरलाया। समझाया बहु लोग कुटम्ब ने न मानी हट में आया। नाश किया कुल जग में अपना अजश बाँधकर किया मरन ॥ १ ॥ भरत चक्र हैं जाहिर जग में राज किया तिनने छह खण्ड। इन्द्र सार की विभूति जिनके बल कर पूरण हैं गुणवंत। युद्ध किया बाहुबली जी से लड़े दोई दोऊ भुजदन्ड। उठा लिये बाहुबलीजी ने चरम शरीरी हते प्रचंड। भरतेश्वर का मान संगकर, द्रग जानी सुन हरो मगन ॥ २ ॥ राजा अकंपन रचो स्वयंवर आद समय में आनंदपूर। देश २ के भूपति आये उठी गगन में छाई धूप। माल परी जा कुँवर गले में उतर गये सब के मुख नूर। अर्क कीर्ति का मान भरा था जेठा सुत चक्रीका सूर। नाश किया कुल जग में अपना आखिर को फिर हारा रन ॥ ३ ॥ मान नरक की खान ऊंच से नीच करे अरबुध नाशे। ज्ञान ध्यान होने नहिं पावे, नाना विध के रँक फंसे। यह विचार नर अपने मनमें कर विचार बिगड़े आवें। परी आत्मा के वश चेतन या में सुख कछु नहिं पावें। कहते 'लछमण' सिघई मानको तजो करो तुम प्रभु भजन ॥

(११९) भजन।

मानुष पर्याय गमाई रत्नत्रय निधि नहिं पाई ॥ टेक ॥
भयो चार प्राण को धारी, दुख वर्नत रसना हारी, ओजाने केवल धारी।
[झेला]—एक स्वास में जन्म मृत्यु दश आठ वार धर लिया जी,
लट पपील अलि आदि असेनी भुगतत २ गया जी ।
दुर्लभ चिन्तामन जग ज्यों यह सैनी पशु पर-नया जी ॥
दोहा—कथा तहां के दुःख की, सही अनन्ती वार। काल अनन्त जहां गये चेत २ चित पार ॥ श्री गुरु ने राह बताई रत्नत्रय निध नहिं पाई ॥ टेक ॥ जब पाप उदै जिय आवे, जब निन्द नरक गति पावे। तिथी सागर बन्ध कमाये, कर्मन वश काल खिपावे ॥
[झेला]—छेदन भेदन ताड़न तापन शूली रोपन किया जी,
असुर लखाया वैर जहाँ जिन मार २ निज किया जी। सिंहासन से आंट फार मुख तामों शीसो दिया जी, जहां चितारत हाय हाय यह, कौन पाप हम किया जी ॥
दोहा—कथा तहाँ के दुःख की, कहैं कहाँ लों कोय। कै जाने जिन केवली कै जाने जिय सोय ॥ याद मोह नरक दुखन की आई रत्नत्रय निध नहिं पाई ॥ टेक ॥ रह गर्भ मांझ दुख भीनों, सो मोपर जात कहीनों ॥
[झेला]—बालपने अज्ञान दशा में धर लिया ज्ञान नहिं रंचजी।
तरुणपने तरुणी संग इन्द्री विकल भई है पंच जी ॥ विकल दशा धर वृद्धपने में कियों पुन्न नहिं रंच जी। तीनों पन ऐसे गये ज्यों, ज्ञान बिना तिर्यञ्च जी ॥
दोहा—तीनों पन ऐसे गये—मिलो न सम्यक भेद, देव धर्म गुरु ग्रंथ बिन भय २ पायो खेद। शैली बिन बुद्धि नशाई रत्नत्रय निधि नहिं पाई ॥टेक ॥ कोई पूर्व सुकृत कीनों क्रम २ कर सुर पद लीनों, लोकोत्तम भोग नवीना सुर त्रिय समूह रस भीना ॥

[झेला]—कभी जिनालय जाय सुरन संग पूजा जिनकी करी जी। मेरु आदि नन्दीश्वर वन्दे धन्य २ जा घड़ी जी॥ सागर बन्ध प्रमाण जहाँ थिर सुख मय सम्पत भई जी। आयु अन्त माला मुरझानी लख उर आरत धारी जी॥

दोहा—नरक वास सम्यक सहित, भलो कह्यो जिनराज। सुर पद पायें कहा भयो भ्रम एकेन्द्री व्याप॥ अब चेत २ चित भाई रत्नत्रय निध नहिं पाई॥ टेक॥ दृग बोध चरित्र विचारो सम्यक को मूल विसारो। रागादि सुभट मद मारो फिर आतम तत्व विचारो। अविनाशी आनन्द स्वरूपी भये चेतना राम जी। अलख, अक्षय, अविचल, अविनाशी है सिद्धन के धाम जी। निर्विकार निर्धार कर्म सब, विमल अमल शुभ ठाम जी। स्वपद रचत जे धन्य २, तिन को ले करत प्रणाम जी॥

दोहा—यह विनती मन से करी, जिन शैली के भ्रात। रत्नत्रय रस पान कर वमन करो मिथ्यात। जिन धुन सुन कुमति नशाई, रत्नत्रय निध नहिं पाई॥ टेक॥

(१२०) भजन।

हम जानी हम हूं पर बीती, एक बिना सब ही पर बीती॥ टेक॥
राम लछन दोई बन को सिधारे, सीता हरी उनही पर बीती।
मानतुंग मुन बन्दन डारे, श्रीपाल कोटी भट जीती॥ हम०॥
भई है द्वारका भस्म पलक में, विध हरने हर बल दुख देती।
छप्पन कोट जदुवंशी जरे, जहां जैसे बाती जरै घृत की॥ हम०॥
और चले कछु विध पै नाहां, कर्मन की गति परत न जाती।
कहत 'परमानन्द', या सबसों अब होनी होत सो परत अचीती॥ हम०॥

(१२१) गजल।

मेरा श्रद्धान ऐसा हो, कि जैसे गंग का पानी।
अटल भक्ति हो जिन मत में, प्रभो मन में यही ठानी॥ टेक॥

तेरे स्याद्वाद सिन्धु की, प्रवल धारा में वह जाते। निखिल पाखंड दुनियाँ का कि, जैसे सूक्ष्म तृण जानो ॥ १ ॥ ध्रौव्य उत्पात व्यय सहितं, द्रव्य भगवन् तेरे मत में। नित्य नश्वर स्वरूपी है, एक धा नेक रूपी है ॥ २ ॥ युक्ति शुभ ढंग से तुमनें, हता परवादि गण इक दम। वताया सत्य शासन में, हरी भवें दुःख की खानी ॥ ३ ॥ निखिल दोषावरण तुम ने, जलाया ध्यान अग्नि में। सप्त तत्वार्थ का मतलव, वताया है तेरी वानी ॥ ४ ॥ मेघ की गर्जना जैसी, दिव्य वानी तेरी भगवन्। सुरासुर वृंद मिल करके, तर्क मस्तक से हैं मानी ॥ ५ ॥

(१२२)

दयामय धर्म उत्तम है, सभी धर्मों से इस जग में। नशाता कर्म वन्धन जो लगाता मोक्ष के मग में ॥ टेक ॥ जगत में जीव जितने हैं, सभी के जान है तुमसी। सताओ न किसी को तुम, लगो परमार्थ के पथ में ॥ १ ॥ हमारे वन्धु हैं सव ही, न कोई द्वेष हम उनसे, रहें तत्पर सदा इस में ॥ २ ॥ पिलाओ शत्रुओं को भी, प्रेम पीयूष की धरा। यही कर्त्तव्य है सव का वताया जैन ग्रन्थों में ॥ ३ ॥ हटाओ स्वार्थ वन्धन को, करो अभिमान का मर्दन। लगाओ शक्ति को अपनी, दुखी जीवों की उपकृति में ॥ ४ ॥ रखे विपरीत वृत्ति भी, यदि हमसे कोई मानी। न उनसे द्वेषता धारें, न धारें मित्रता मन में ॥ ५ ॥

(१२३) भजन।

तोहि समझायो सौ सौ वार जिया, तोहि समझायो ॥ टेक ॥ देव सुगुरु की परहित में रति, हित उपदेश सुनायो ॥ सौ सौ० ॥ विषय भुजँग सेय सुख पायो, पुनि तिन सौं लपटायो। स्वपद विसार रच्यो पद पद में, मदरत ज्यों वोरायो ॥ सौ सौ० ॥ तन धन स्वजन

नहीं हैं, तेरे नाहक नेह लगायो। क्यों न तजे भ्रम, चाख समामृत, जो नित सन्त सुहायो ॥ सो सो० ॥ अबहू समझ कठिन यह नर भव, जिन वृष बिना गमायो। ते विलखे मनिडार उदधि में, 'दौलत, को पछतायो ॥ सो सो०

(१२४) भजन।

जिन धर्म रत्न पाय के, स्वकाज न किया।
नर जन्म पायके वृथा, गमाय क्यों दिया ॥ टेक ॥

अरहंत देव सेव सरे, सुकृत की मही। तजके कुधी कुदेव की आराधना गही। पर अनतो परतत्त्व, स्वच्छ ज्ञान को हरे। इन में कुजीव जे कुजोनी में परे ॥ जिन धर्म रत्न० ॥ १ ॥ पर सँग के परसंगते, परसंग ही किया। तेज के सुधा स्वरूप को जल क्षार ही पिया। जिन धर्म, मद, मोह, काम, लोभ की झकोर में परो, तज इन को ये वैरी बड़े लख दूर से डरो ॥ जिन धर्म रत्न० ॥ २ ॥ हिरदे प्रतीत कीजिये सुदेव धर्म की, तजि राग दोष मोह औ कुदेव कर्म की। सजि वीतराग भाव, सो स्वभाव आपना विधि बन्ध के नियन्द भाव आपना ॥ जिन धर्म रत्न० ॥ ३ ॥ मन काम नर निरोध बोध सोध कीजिये, तजि पुण्य पाप बीज आप खोज लीजिये। सधर्म का यह भेद श्रीगुरु देव ने कहा, शिव धाम काज यों जिनेश्वरदास ने कहा ॥ जिन धर्म रत्न० ॥ ४ ॥

(१२५) अरे जिया, जग धोखे की टाटी ॥ टेक ॥
झूठा उद्यम लोक करत हैं, जिस में निशदिन घाटी ॥ अरे०
जानबूझ कर अन्ध बने हैं, आँखन बांधी पाटी ॥ अरे०
निकस जाँयगे प्राण छिनक में, पड़ी रहेगी माटी ॥ अरे०
दौलतराम समझ मन अपने, दिल की खोल कपाटी ॥ अरे०

(१२६)—फानी दुनिया।

कह रहो है आस्मां, यह सब समाँ कुछ भी नहीं।
यह चमन धोखे की टट्टी—के सिवा कुछभी नहीं॥
भुव तोड़ ढोले जोड़ सारे, बाँधकर बन्दे कफ़न।
गोर की बगली में चित है, पहलवां कुछ भी नहीं॥
जिनके महलों में, हजारों रंग के फानूस थे।
झाड़ उनके कब्र परहै औ निशाँ कुछ भी नहीं॥
बख्त वालों का पता देते हैं तख्ते गोर के।
खोज लगता है यहीं तक बाद जाँ कुछ भी नहीं॥
उड़ गये तख्ते सुलेमा फट गये परियों के पर।
गर किसीने चार दिन बाँधी हवा कुछ भी नहीं॥
कहते हैं दुनियाँ में होता दुःख हरइक का इलाज।
है यहाँ दरदे जुदाई की दवा कुछ भी नहीं॥
जिनके डंके की सदा से गूंजते थे आसमाँ।
मकबरों में दम बखुद है "हूं" न "हाँ" कुछभी नहीं॥

(१२७)—लाल कैसे जाओगे० [होलो]

लाल कैसे जाओगे, असरन सरन कृपाल, लाल० ॥ टेक इक दिन सरस बसंत समय में, केशव की सब नारी-प्रभु प्रदच्छना रूप खड़ी है, कहत नेमि पर वारी ॥ लाल० ॥ कुंकुम लै मुख मलत रुक्मनी, रंग छिरकत गाँधारी-सतभामा प्रभु ओर जोर कर, छोड़त है पिचकारी ॥ लाल० ॥ व्याह करोतो छूटो, इतनी अरज हामरी-ओंकार कहकर प्रभु मुलके, छांड़ दिये जगतारी लाल० ॥ पुलकित-बदन मदन पितु भामिनि, निज निज सदन सिधारी—'दौलत' जादव वंश व्योम शशि, जयो जगत हितकारी ॥ लाल० ॥

स्याद्वाद प्रिंटिंग प्रेस सागर में मुद्रित।